दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

D Edition

Reg.No.RJ26D00120077

भारत टाइम्स

www.bharattimenews.com

सत्यमेव परं श्रुतम्

Bharattimesnews01@gmail.com

विचार

अपने मन को काबू में रखें। जिस व्यक्ति ने मन पर काबू पा लिया वह बेकार की चिंताओं और इच्छाओं से दूर रहता है। साथ ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति पर ध्यान रखता है।

पेज 4

वर्ष- 2 | अंक-140 | दिल्ली, मंगलवार 2 जुलाई 2024 | पेज-8 | ई-पेपर नई दिल्ली से प्रसारित

न्यूज. ब्रीफ

जून में 1,389 करोड़ यूपीए ट्रांजैक्शन हुए

नई दिल्ली। जून में यूनिफाइड पेमेंट सिस्टम के जरिए 1,389 करोड़ ट्रांजैक्शन हुए। इस दौरान टोटल 2,007 लाख करोड़ रुपए की राशि ट्रांसफर की गई। ट्रांजैक्शन की संख्या में सालाना आधार पर 49 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, इसके जरिए ट्रांसफर की जाने वाली राशि में 36 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। एक साल पहले यानी जून 2023 में 934 करोड़ ट्रांजैक्शन के जरिए 14.75 लाख करोड़ रूपए का लेनदेन हुआ था। वहीं, पिछले महीने की तुलना में ट्रांजैक्शन की संख्या में 1 प्रतिशत और ट्रांसफर की गई राशि में 2 प्रतिशत की कमी आई है।

प्रीतम सिंह पुनः वर्कर्स पार्टी के महासचिव निर्वाचित

सिंगापुर। सिंगापुर के भारतीय मूल के विपक्ष के नेता प्रीतम सिंह को वर्कर्स पार्टी का महासचिव पुनः निर्वाचित किया गया है। पुनः निर्वाचित चेयरवुमैन सिल्विया लिम की अगुवाई में कुल 14 सदस्यों ने केंद्रीय कार्यकारी समिति (सीईसी) के लिए वोट दिया जो वर्कर्स पार्टी की शीर्ष निर्णय निर्धारण संस्था है। सिंह को निर्विरोध चुन लिया गया। वह 2018 से पार्टी के महासचिव हैं। सिंह ने कहा कि हम अगले दो साल इस सीईसी के साथ काम करने के लिए उत्साहित हैं। चैनल न्यूज एशिया ने सिंह के हवाले से कहा, यह उम्मीदवारी के बारे में नहीं था, यह पार्टी का आंतरिक चुनाव था इसलिए मेरी टिप्पणियां उस तक ही सीमित रहेंगी।

चुनाव में पिछड़े राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों

पेरिस। फ्रांस में हुए नेशनल असेंबली के चुनाव में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की पार्टी पिछड़ गई है। फ्रांस के गृह मंत्रालय ने सोमवार को पहले चरण की वोटिंग के रिजल्ट जारी किए। रिजल्ट के मुताबिक, दक्षिणपंथी पार्टी नेशनल रैली को सबसे ज्यादा 35.15 प्रतिशत वोट मिले। दूसरे पर वामपंथी न्यू पॉपुलर फ्रंट गठबंधन को 27.99 प्रतिशत मिले। वहीं, मैक्रों के रेनेसां पार्टी को 20.76 प्रतिशत वोट मिले हैं। दूसरे चरण की वोटिंग 7 जुलाई को होगी। दूसरे चरण में केवल वे ही उम्मीदवार खड़े हो सकते हैं, जिन्हें पहले चरण में 12.5 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिला हो। नेशनल असेंबली में बहुमत के लिए किसी भी पार्टी को 289 सीटें जीतना जरूरी है। फ्रांस की संसद का कार्यकाल 2027 में खत्म होना था, लेकिन यूरोपीय संघ में बड़ी हार के कारण राष्ट्रपति मैक्रों ने समय से पहले इसी महीने संसद भंग कर दिया था।

मां-बेटी को जिंदा दीवार में चुनवाया

हैदराबाद। पाकिस्तान के हैदराबाद में एक मां-बेटी को उन्हीं के रिश्तेदारों ने दीवार में चुनवा दिया। स्थानीय लोगों ने जब बच्ची की चीख पुकार की आवाज सुनी तो उन्होंने तुरंत पुलिस को बुलाया। पुलिस ने लोगों की मदद से दीवार तोड़ी और मां-बेटी को बचाया लिया। दोनों की हालत गंभीर है। स्थानीय लोगों के मुताबिक महिला को दीवार में चुनवाने वाला उसी का देवर था, जिसका नाम सोहेल है। सोहेल को डर था कहीं उसकी भाभी दीवार न तोड़ दे इसलिए उसने सीमेंट और ईट से दीवार चुनवाई। महिला ने आरोप लगाया कि सोहेल उन्हें कई सालों से प्रॉपर्टी के लिए परेशान कर रहा था।

फंदे से लटके मिले एक ही परिवार के 5 लोग

वही तारीख, वही तरीका... 6 साल बाद दिल्ली के बुराड़ी की तरह मप्र में घटना

- खास बात यह है कि इस घटना ने आज के ही दिन यानी 1 जुलाई 2018 को दिल्ली के बुराड़ी में हुई घटना को याद दिला दिया है।

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश के अलीराजपुर में एक घर के भीतर पांच लोगों के शव फांसी के फंदे पर लटकते हुए पाए जाने से हडकंप मच गया। पति-पत्नी और तीन बच्चों के शव मिलने की सूचना पर जिले के एसपी राजेश व्यास मौके पर पहुंचे। यह हत्या है या सामूहिक आत्महत्या? एफएसएल और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही खुलासा होगा। खास बात यह है कि इस घटना ने आज के ही दिन यानी 1 जुलाई 2018 को दिल्ली के बुराड़ी में हुई घटना को याद दिला दिया है। अलीराजपुर जिले के सोंडवा थाने इलाके के रावडी गांव की यह घटना है। मृतकों में घर का मुखिया राकेश, उसकी पत्नी ललिता और बेटी लक्ष्मी, दो बेटे अक्षय और प्रकाश शामिल हैं। रिश्ते के लोगों ने पूरे परिवार की हत्या की आशंका जताई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। फंदे से लटके हुए मिले शव। बता दें कि दिल्ली के बुराड़ी के मास सुसाइड केस ने पूरे देश को झकझोर कर रखा दिया था। आज यानी 1 जुलाई को इस कांड को पूरे 6 साल बीत चुके हैं। 30 जून 2018 की देर रात 12 बजे से एक बजे के करीब चुंडावत परिवार (जिसे भाटिया परिवार के रूप में भी जाना जाता था) के 11 लोगों ने आत्महत्या कर ली थी। दस लोग फांसी पर लटके पाए गए, जबकि परिवार की सबसे बुजुर्ग सदस्य दादी की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। अगले दिन यानी 1 जुलाई 2018 को मौत के बाद सुबह-सुबह उनके शव घर से बरामद किए गए थे। बुराड़ी केस में दावा किया गया कि परिवार के मुखिया ललित भाटिया ने जादू-टोने के वशीभूत होकर पूरे परिवार को सामूहिक आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया था। 11 मौतों को मनोविकृति से प्रेरित माना गया।

रिश्तेदारों ने जताई हत्या की आशंका- पड़ोसियों का कहना है कि राकेश किसान था। उसने या परिवार के किसी सदस्य ने कभी किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। वहीं, रिश्तेदारों ने हत्या की आशंका जताई है। पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है। भाजपा मंडल अध्यक्ष जयपाल सिंह ने कहा कि यह परिवार खुदकुशी जैसा कदम नहीं उठा सकता। यह हत्या है। पुलिस को इसकी जल्द जांच करना चाहिए। उन्होंने कहा कि परिवार के 5 लोगों के शव मिलने से पूरे गांव में शोक है।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार

एसपी राजेश व्यास ने बताया कि सुबह 7 बजे मामले की सूचना मिली थी। राकेश का घर उसके खेत के पास ही बना है। प्रकरण गंभीर है इसलिए एफएसएल की टीम बुलाई है। साइबर टीम को भी लगाया है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही पता चलेगा कि किन परिस्थितियों में मौत हुई है। कलेक्टर डॉ. अरविंद अभय बेडेकर ने कहा कि किन परिस्थितियों में मौत हुई, यह बताना अभी जल्दबाजी होगी। पुलिस टीम गंभीरता से जांच कर रही है।

नर्सिंग घोटाले पर नेता प्रतिपक्ष अड़े, अध्यक्ष ने आसंदी से दिया आश्वासन

आज प्रश्नकाल के बाद होगी नर्सिंग घोटाले पर चर्चा

भोपाल। मप्र विधानसभा का मानसून सत्र सोमवार से शुरू हुआ। पहले दिन नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और कांग्रेस विधायक एप्रिन पहनकर पहुंचे और नर्सिंग घोटाले को लेकर नारेबाजी की। उसके बाद सदन में नर्सिंग घोटाले पर चर्चा की मांग की। इस पर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच जमकर हंगामा हुआ। उसके बाद दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने व्यवस्था दी कि मंगलवार को प्रश्नकाल के बाद इस विषय पर चर्चा कराई जाएगी। कांग्रेस ने तय किया है कि नर्सिंग घोटाले पर स्थगन प्रस्ताव लाएगी। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि नर्सिंग फजीवाड़े मामले में चर्चा कराए जाने को लेकर अध्यक्ष को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा की हम चाहते है कि सदन की 14 दिन की बैठकें पूरी चले। उन्होंने कहा कि विपक्ष के हंगामें को लेकर आरोप लगाए जाते हैं। हम चाहते हैं कि बीच का रस्ता निकल कर चर्चा कराई जाए। कोर्ट में जो मामला है उस पर हम चर्चा नहीं करना चाहते हैं। नर्सिंग काउंसिल की पॉलिसी बनाने वाले अधिकारियों पर एक्शन हो। इस पूरे घोटाले को लेकर कांग्रेस पदार्फाश करेगी। **सरकार चर्चा करने को तैयार-** मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा कि सरकार चर्चा करने को तैयार है, लेकिन सदन की परंपरा के साथ चर्चा हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि शालीनता के साथ अपनी बात रखी जाए। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि सदन चर्चा के लिए है सभी लोगों की बात आ गई है। निश्चित रूप से दोनों पक्षों को मैंने सुना। लेकिन सदन नियम परंपरा और प्रक्रियाओं से चलता है। पुरानी भी कई परंपरा है। भावनाओं को भी कमजोर नहीं करना चाहिए। मैंने दोनों पक्षों को सुना है अलग से भी बात की है सदन में भी सुना है। मैं प्रतिपक्ष को कहना चाहता हूं कि आप दोनों लोगों ने मुझ पर छोडने के लिए कहा है। मैं कल उचित नियम के तहत इस पर चर्चा कराऊंगा। नेता प्रतिपक्ष ने समय की बात करने पर अध्यक्ष ने कहा कि प्रश्नकाल के बाद नर्सिंग घोटाले पर कल चर्चा होंगी।

नए कानून लागू होने पर दी बधाई

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नए कानूनों के बदलाव को लेकर बधाई दी। सीएम ने कहा की आईपीसी की जगह साक्ष्य अधिनियम में बदलाव किया है। टोल टैक्स को लेकर सरकर ने नियम में परिवर्तन किया है। अवैध वसूली रोकने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष भरेंगे अपना आयकर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने सदन को अवगत कराया कि सरकार ने यह निर्णय लिया है कि मुख्यमंत्री और मंत्री अब अपना आयकर स्वयं भरेंगे। मैं यह घोषणा करता हूं कि विधानसभा अध्यक्ष के नाते अपना आयकर स्वयं भरूंगा। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि हम भी इसमें शामिल हैं। उल्लेखनीय कि मोहन सरकार ने मंत्री वेतन भत्ता अधिनियम में संशोधन करने का निर्णय किया है। यह विधेयक मानसून सत्र में ही प्रस्तुत किया जाएगा, जिसका अनुमोदन सोमवार को कैबिनेट ने भी कर दिया।

25 राज्यों में बारिश का रेड अलर्ट

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने देश के 25 राज्यों में आज और अगले 5 दिन बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। इनमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, बिहार, झारखंड, दक्षिण और नॉर्थ-ईस्ट के राज्य शामिल हैं। मौसम विभाग ने बताया कि मानसून अब देश के करीब सभी राज्यों में पहुंच गया है। अगले तीन दिन में यह राजस्थान, पंजाब और हरियाणा के बाकी बचे हिस्से को भी कवर कर लेगा।

97.87 प्रतिशत दो हजार के नोट वापस लौटे

अब लोगों के पास बचे 7,581 करोड़ के नोट

नई दिल्ली। दो हजार रुपये के बैंक नोटों में से 97.87 प्रतिशत बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गए हैं और केवल 7,581 करोड़ रुपये मूल्य के नोट ही जनता के पास बचे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सोमवार को यह जानकारी दी। आरबीआई ने 19 मई, 2023 को 2000 रुपये मूल्यवर्ग के बैंकनोटों को प्रचलन से वापस लेने की घोषणा की थी। 19 मई, 2023 को कारोबार के बंद होने के बाद प्रचलन में रहे 2000 रुपये के बैंकनोटों का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था जो 28 जून, 2024 को कारोबार के बंद होने पर घटकर 7,581 करोड़ रुपये रह गया है। केंद्रीय बैंक ने एक बयान में कहा कि इस प्रकार, 19 मई, 2023 तक प्रचलन में रहे 2000 रुपये के 97.87 प्रतिशत बैंक नोट बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गए हैं। 2000 रुपये के बैंकनोटों को जमा करने और/या बदलने की सुविधा 7 अक्टूबर, 2023 तक देश की सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध थी। 2000 रुपये के बैंकनोटों के आदान-प्रदान की सुविधा 19 मई, 2023 से रिजर्व बैंक के 19 निर्गम कार्यालयों में भी

नए कानून बीएनएस के तहत देश में पहला केस ग्वालियर में हुआ दर्ज

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दी जानकारी

- हजीरा थाने में रात 12.10 बजे दर्ज हुई नए कानून के मुताबिक पहली एफआईआर

भोपाल। नए कानून के तहत देश भर में पहला मामला ग्वालियर के हजीरा थाने में दर्ज किया गया। यह जानकारी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दी है। भारतीय न्याय संहिता लागू होते ही ग्वालियर के हजीरा थाने में रात 12.24 बजे जिले की पहली एफआईआर बाइक चोरी की दर्ज हुई। हालांकि अमित शाह ने नए कानून के तहत एफआईआर दर्ज करने का समय रात 12.10 का बताया है। सीएसपी महाराजपुरा नागेंद्र सिंह सिकरवार ने बताया कि मूलरूप से भिंड के गोरमी स्थित ग्राम कल्याणपुरा में रहने वाले सौरभ पुत्र नागेंद्र सिंह नरवरिया ग्वालियर के हजीरा इलाके में यादव धर्मकांटा के पास मां पीतांबरा कालोनी में किराये से रहते हैं। रविवार रात करीब 12 बजे वह घर आए। बाइक घर के बाहर खड़ी की। महज पांच मिनट बाद ही जब लौटकर आए तो बाइक गायब थी। वह हजीरा थाने पहुंच गए। टीआई शिवमंगल सिंह सेंगर यहां मौजूद थे।

चार्जशी छग लिकर स्कैम...ईओडब्ल्यू ने पेश की चार्जशीट

रायपुर कोर्ट में 12 पैकेट में लेकर पहुंचे

रायपुर। छत्तीसगढ़ शराब घोटाला केस में ईओडब्ल्यू ने सोमवार को एपी त्रिपाठी, अनवर ढेबर और अन्य के खिलाफ 9 हजार पन्नों की चार्जशीट पेश की। ईओडब्ल्यू के अफसर 12 पैकेट में केस से संबंधित दस्तावेज लेकर कोर्ट पहुंचे। इससे पहले ईडी ने आरोपियों के खिलाफ 10 हजार पन्नों की चार्जशीट फाइल की थी। दरअसल, 2000 करोड़ रुपए से अधिक के लिकर स्कैम मामले में ईडी के प्रतिवेदन के बाद ईओडब्ल्यू ने 17 जनवरी को केस फाइल किया था। इसके बाद ईओडब्ल्यू ने एपी त्रिपाठी, अनवर ढेबर, त्रिलोक सिंह ढिल्लन और अरविंद सिंह को पूछताछ के लिए गिरफ्तार कर लिया था। ईडी ने 12 दिन पहले पेश की थी चार्जशीट करीब 12 दिन पहले शराब घोटाला केस में प्रवर्तन निदेशालय ने रायपुर की पीएमएलए कोर्ट में चार्जशीट दायर की थी। 10 हजार पन्नों की चार्जशीट के साथ 200 पेज का आरोप पत्र भी पेश किया था। चार्जशीट में रिटायर्ड आईएएस अनिल टुटेजा, कारोबारी अनवर ढेबर, त्रिलोक ढिल्लन और आबकारी विभाग में अधिकारी रहे एपी त्रिपाठी को मास्टरमाइंड बताया गया। दस्तावेजों में बताया गया था कि आरोपियों ने मिलकर सरकारी सिस्टम का दुरुपयोग किया और बड़े भ्रष्टाचार को अंजाम दिया। इस बात का भी जिक्र है कि इन रुपयों को कुछ राजनीतिक साझेदारी के साथ बांटा गया। चार्जशीट में कारोबारियों और अधिकारियों के बीच हुई वॉट्सऐप चैट से लेकर शराब घोटाले के सिंडिकेट के बीच कामकाज का ब्योरा भी है।

ट्रेनों के समय पालन में उत्तर पश्चिम रेलवे देश में दूसरे पायदान पर

मेल एक्सप्रेस ट्रेनों के संचालन समय में 93.07 प्रतिशत समय पालन

2023-24 वित्त वर्ष में 29.10 मिलियन टन माल लदान

टिकट चेकिंग से 62.83 करोड़ का उल्लेखनीय राजस्व

11111111

जोधपुर। ट्रेनों के संचालन में 93.07 प्रतिशत समय पालन से उत्तर पश्चिम रेलवे ने समूचे भारतीय रेलवे पर दूसरा स्थान अर्जित करने में सफलता हासिल की है। उत्तर पश्चिम रेलवे जोन के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण ने बताया कि जोधपुर,जयपुर,अजमेर व बीकानेर मंडलों के समन्वित सहयोग व ट्रेनों के संचालन में बेहतर तालमेल से जोन पर मेल एक्सप्रेस ट्रेनों के संचालन में 93.07 फीसदी समय पालन प्राप्त किया गया है और इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर इस क्षेत्र में उत्तर पश्चिम रेलवे जोन को भारतीय रेलवे में दूसरे स्थान पर शुमार किया गया है। उनका कहना है कि उत्तर पश्चिम रेलवे जोन ने यात्री सुविधा के संरक्षण और उनमें विस्तार करते हुए दोहरीकरण कार्यों की पूर्णता,स्थाई प्रतिबन्धों की समाप्ति और सभी क्षेत्रों में नियमित मोनिटरिंग के फलस्वरूप ट्रेनों के समय पालन में उल्लेखनीय सुधार किया है।

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी के अनुसार इसके साथ ही उत्तर पश्चिम रेलवे जोन ने महाप्रबंधक अमिताभ के कुशल नेतृत्व और निगरानी में माल लदान के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। जोन ने वर्ष 2023-24 में 29.10 मिलियन टन का माल लदान किया जबकि चालू वित्त वर्ष में अकेले मई माह में 2.59 मिलियन टन माल लदान किया जो रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य से 2.55 मिलियन टन की तुलना में 1.06 फीसदी ज्यादा है।

इन मदों में हुई उल्लेखनीय आय - गत वर्ष के 7288 करोड़ रुपए की तुलना में 1.8 प्रतिशत अधिक हैं। -उत्तर पश्चिम रेलवे ने प्रारम्भिक यात्री आय से 3202 करोड़ रुपए व माल परिवहन से 3371 करोड़ रुपए प्राप्त किए हैं। आय को बढ़ाने के लिए अन्य संसाधनों का भी बेहतर उपयोग किया जा रहा है जिसके तहत रेलवे राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। -बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों पर अंकुश लगाने के लिये जयपुर,जोधपुर,अजमेर व बीकानेर मंडलों पर विशेष टिकट चैकिंग अभियानों से 62.83 करोड़ रुपए अर्जित किए गए हैं। मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का मानना है कि उत्तर पश्चिम रेलवे ने यात्री तथा माल परिवहन संचालन में सम्पूर्ण भारतीय रेलवे पर अलग पहचान बनाई है तथा नई ऊंचाईयों की ओर अग्रसर है।

म्यूजिक मेलोडी सीजन 8 का सफल आयोजन: संगीत प्रेमियों ने बिताई यादगार शाम

म्यूजिकल सफर इंडिया द्वारा दिया गया सारंगी वादक उस्ताद साबिर खान साहब को द सारंगी मैस्ट्रो अवार्ड

♦भारत टाइम्स♦

जयपुर(लाइव स्टोरी: अमित कुमार चेचानी)। राष्ट्रीय संस्था म्यूजिकल सफर इंडिया द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम म्यूजिक मेलोडी सीजन 8 गुलाबी नगरी में एक अविस्मरणीय अनुभव साबित हुआ। इस कार्यक्रम में शहर के प्रमुख संगीतकारों और गायकों ने भाग लिया और अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मशहूर सारंगी वादक उस्ताद साबिर खान साहब की प्रस्तुति रही। उनकी उंगलियों का जादू जब सारंगी के तारों पर चला तो हर कोई मानो साक्षात संगीत की आत्मा से मिल रहा था। उनके साथ तबले पर उस्ताद सलामत हुसैन साहब ने तबले की संगत दी। दोनों की जुगलबंदी से उपस्थित सभी दर्शक संगीत की एक अद्भुत और अनोखी दुनिया में खो गए। उस्ताद साबिर खान साहब जयपुर घराने से 350 वर्षों से चली आ रही सारंगी के संगीत की परंपरा को बखूबी आगे बढ़ा रहे है तथा देश विदेश में सारंगी की प्रस्तुतियों के द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत का मान भी बढ़ा रहे है। शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान को देखते हुए संस्था की ओर से उस्ताद साबिर खान साहब को द सारंगी मैस्ट्रो अवार्ड से नवाजा गया। संस्थापक सपना पाठक और प्रोग्राम हेड विजेंद्र पाठक ने बताया कि शास्त्रीय संगीत ही सभी प्रकार के संगीत का मुख्य आधार है। आज की आधुनिक युग में कराओके के बढ़ते चलन से कई कलाकार इन शास्त्रीय वाद्य यंत्रो से दूर होते जा रहें। शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देना और संगीत की विभिन्न रूपों और शैलियों को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें संस्था पूरी तरह सफल रही। कार्यक्रम में बॉलीवुड कलाकार अकबर खान व कई विशिष्ट अतिथि शामिल हुए।

सपना पाठक द्वारा प्रस्तुत गीत फजा भी है जंवा जंवा, रमिता मित्तल द्वारा कैसी है पहेली और वसीम खान द्वारा होश वालों को खबर क्या गीतों ने शमा बांध दिया। साथ ही अतिथि गायक अमित चेचानी का युगल गीत जाने जां भी सराहा गया। संगीत प्रेमियों ने इस आयोजन को एक यादगार शाम करार दिया और आने वाले समय में और भी ऐसे कार्यक्रमों की उम्मीद जताई। प्रोग्राम हेड विजेंद्र पाठक द्वारा सभी अतिथियों और कलाकारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में रमिता मित्तल, शैम्स वसीम खान, भानु बंसल, एम एल छाबड़ा, दीपक अरोड़ा, गुंजन सरीन अनिल भारद्वाज, अनीता छाबड़ा, अश्वनी वादवा, आशीष मेहता, दामिनी सक्सेना, सुरेखा मित्तल, धीरज कुमार, जुगल किशोर, कामिनी मुगलानी, कविता सिसोदिया, शैलेंद्र माथुर, किशन चंद मेंघानी, किशोर क्षत्रिय, मंजू माहेश्वरी, मनोज कुमार, मीनाक्षी सिंह, मिलन जोशी, मुकेश गुप्ता, रिचा माथुर, रितु माथुर, एस पी शर्मा, सीमा साह, शैलेंद्र महानोत, शरद माथुर, वीता माथुर आदि गायक कलाकार शामिल हुए।

डॉक्टर्स मारिजों के लिये साक्षात भगवान का रुप होते है: गदिया

एमईएस हॉस्पिटल एण्ड डायग्नोस्टिक सेंटर में मनाया डॉक्टर्स डे

चित्तौड़गढ़(अमित कुमार चेचानी)। एमईएस हॉस्पिटल एण्ड डायग्नोस्टिक सेंटर, सेक्टर - 5, गाँधीनगर चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में डॉक्टर्स-डे पर हॉस्पिटल परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम किया गया। अध्यक्ष गोविन्दलाल गदिया ने डॉक्टर्स डे पर समस्त डॉक्टर्स को बधाई दी , सोसायटी अध्यक्ष गोविंद लाल गदिया ने सभी डॉक्टर्स का पगड़ी पहनाकर व उपर्रणा से सम्मान व अभिनन्दन किया व कहा कि डॉक्टर्स का सामाजिक स्वास्थ्य विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है, डॉक्टर्स मारिजों के लिये साक्षात भगवान का रुप होते है। इस अवसर पर परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया। हॉस्पिटल परिसर में किया वृक्षारोपण सोसायटी अध्यक्ष गदिया ने कहा कि हरे भरे वातावरण का मरीजों पर भी अच्छा मानसिक व शारीरिक प्रभाव पड़ता है जो उन्हें शीघ्र ठीक होने में भी मदद करता हैं । परिसर में हरियाली को बढावा देने के लिए श्रीमती कान्ता गदिया , एमईएस हॉस्पिटल के डॉक्टर्स डॉ. अरविन्द सनाढ्य, डॉ. प्रतिभा सनाढ्य, डॉ. सचिन शाक्य व डॉ अजय शर्मा ने वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम में नर्सिंग महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.राधेश्याम मेनारिया, हॉस्पिटल स्टॉफ ओम भण्डारी, जे.पी.सिंघल, सभी नर्सिंग व स्टॉफ सदस्य उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि एमईएस हॉस्टिल में मरीजो के लिए आईसीयू ,सोनोग्राफी, डिजिटल एक्सरे ,ईसीजी, कॉटेज सुविधा, ओपीडी एवं आपातकालीन ,फामेर्सी व मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में निःशुल्क इलाज व ऑपरेशन की सुविधा भी उपलब्ध है साथ ही कन्धा, कमर, जोड़ो का दर्द, हाथ पॉव में झुनझुनापन, जलन सुनापन, गठिया रोग हड्डी टूना व हड्डी के सभी ऑपरेशन व सम्पूर्ण इलाज उपलब्ध है।

सीएम भजनलाल शर्मा ने नए कानून को लेकर पुलिसकर्मियों को संदेश दिया वीसी से जुड़े बोरुंदा थानाधिकारी व अन्य पुलिस अधिकारी

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वीसी के जरिए विभिन्न नए कानून व नवीन धाराओं को लेकर विस्तार से चर्चा करते हुए पुलिसकर्मियों व आम जनता को संबोधित किया। बोरुंदा पुलिस थाना अधिकारी देवकिशन ने बताया कि भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023, व भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 के 1 जुलाई से विभिन्न नए कानून पूरे देश में लागू होने को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा वीसी के जरिए जुड़े जिसमें विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए नए कानून के अनुसार ही पुलिस कर्मियों को कार्य करने की सीख दी। इस दौरान स्थानीय पुलिस थाने में बक्साराम कच्छावा, दुगाराम सुथार, महेश शर्मा, ओम प्रकाश जाखड़ खवासपुरा, ऊंकारराम बडियार, सुरेंद्र वैष्णव, सोहनलाल, मुख्य आरक्षी श्रीराम, मुख्य आरक्षी रामनिवास, हेड कांस्टेबल मनोज कुमार, सुखी चौहान, जीवणराम, रामेश्वर मेलाना व सुषमा सहित कई पुलिसकर्मी व ग्रामीण उपस्थित रहे।

मंदसौर विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ कार्यक्रम के द्वारा नव प्रवेषित विद्यार्थियों का स्वागत

♦भारत टाइम्स♦

मंदसौर। मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर के फामेर्सी कॉलेज के द्वारा सोमवार से तीन दिवसीय छात्र इंडक्शन कार्यक्रम दीक्षारंभ शुरू हुआ है, जिसके समन्वयक फामेर्सी कॉलेज के प्रोफेसर डॉ.एल.एन. पाटीदार हैं। कार्यक्रम की शुरूआत में दीक्षारंभ में उपस्थित विद्यार्थियों व अतिथियों को संबोधित करते हुए फामेर्सी कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ.रूपेश कुमार सोनी ने अपने स्वागत भाषण में मंदसौर विश्वविद्यालय के विजन और मिशन से छात्र/ छात्राओं को रूबरू कराया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में मंदसौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.वी.एस.एस. कुमार और विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के डीन ऑफ एकेडमिक्स डॉ.अरुनव दास उपस्थित रहे। दीक्षारंभ में उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रो. वी.एस.एस.कुमार ने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों व सुविधाओं का सुदपयोग करने और शिक्षण अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रेरित किया तथा विश्वविद्यालय में उपलब्ध अनुसंधान संबंधी सुविधाओं तथा उनकी कार्यप्रणाली से विद्यार्थियों को अवगत कराया। आगे उन्होंने इस दीक्षारंभ को एक नई शुरूआत बताया और कहा कि अवश्य ही यह आयोजन इस यात्रा में विद्यार्थियों के लिए सहयोगी साबित होगा। दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के डीन ऑफ एकेडमिक्स डॉ. अरुणव दास ने विश्वविद्यालय की विभिन्न अध्ययन पीठों, विभागों व पाठ्यक्रमों का ब्यौरा प्रस्तुत किया और कक्षा के दौरान विद्यार्थियों के 75 प्रतिशत उपस्थिति को जरुरी बताया। आगे उन्होंने विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करवाई जा रही विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला और विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था से विद्यार्थियों को रूबरू करवाया। इस तीन दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच सामाजीकरण को बढ़ावा देना, शैक्षणिक जगत में हो रहे बदलाव से रूबरू कराना, अनुशासन और अनुभव के आयामों को समाहित करने, सभी विभागों और पाठ्यक्रम का परिचय, प्रयोशालाएं, कार्यशालाएं, एवं डिजिटल संसाधनों का अवलोकन, पुस्तकालय भ्रमण, कैरियर परामर्श और प्लेसमेंट सेल का अवलोकन, प्रश्नोतरी सत्र, संवेदीकरण और जागरूकता कार्यक्रम-संवैधानिक मौलिक कर्तव्यों, कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013, सूचना का अधिकार 2005, लोकसेवा गारंटी अधिनियम 2010, साइबर और बौद्धिक संपदा अधिकार आदि विषय सम्मिलित हैं। नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नए परिवेश में सहज महसूस कराने, उनमें संस्थान की विशिष्ट प्रकृति तथा संस्कृति को सिखाने, अन्य छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ संबंध बनाने तथा उन्हें व्यापक उद्देश्य तथा स्वयं की खोज की भावना से परिचित कराने के उद्देश्य से दीक्षारंभ समारोह 2024 का आयोजन किया गया है।

नवजात शिशुओं को बेबी किट वितरण

महावीर इंटरनेशनल देशना वीरा केंद्र द्वारा संस्था की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष में आयोजन

♦भारत टाइम्स♦

चित्तौड़गढ़(अमित कुमार चेचानी)। महावीर इंटरनेशनल संस्था की स्थापना की 50वीं स्वर्ण जयंती के उपलक्ष में 1 जुलाई से 7 जुलाई तक सेवा सप्ताह मनाया जाएगा देखना चेयरपर्सन वीरा सुनीता सिसोदिया ने बताया कि सेवा सप्ताह के प्रथम दिन प्रथम सेवा कार्य के रूप में सांवलिया बाल एवं महिला राजकीय चिकित्सालय चित्तौड़गढ़ में नवजात शिशुओं को 50 बेबी किट वितरित किए गए। बेबी किट वितरण का मुख्य उद्देश्य नवजात शिशुओं को संक्रमण से बचाना है। सचिव वीरा विनीता जैन ने वीरा बहनों के साथ आज 1 जुलाई को डॉक्टर्स डे पर डॉ. प्रवीण शर्मा का अभिनंदन किया । डिप्टी डायरेक्टर वीरा स्वाति छाजेड ने नवजात शिशुओं की माता को स्वच्छता, स्तनपान तथा संतुलित भोजन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर जागरूक किया । स अवसर पर पूर्व अध्यक्ष वीरा विमला सेठिया, वीरा कल्पना मेहता, वीरा अंजू कोठारी वीरा अनीता भड़कतिया वीरा सीमा भड़कतिया, वीरा अंगूर वाला भड़कतिया, वीरा नगीना मेहता, वीरा भारती बोकाडिया एवं वीरा कामिनी बोकाडिया उपस्थित थे।

आवश्यकता

भारत टाइम्स न्यूज को रिपोर्ट्स ओर अनुभवी मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की आवश्यकता है। यदि आप हमसे जुड़ना चाहते है तो अपना बॉयोडाटा हमे ईमेल करे।

Bharattimesnews01@gmail.com

Whatsapp

9509745147
9799911545

लायंस क्लब चित्तौड़गढ़ ने मनाया राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस

क्लब अध्यक्ष बसंती लाल वैद ने बताया की सीएमएचओ तारा चंद गुप्ता व पीएमओ डॉ .दिनेश वैष्णव की अध्यक्षता में 52 से अधिक डॉक्टर्स व 30 से अधिक नर्सिंग स्टाफ को सम्मानित किया.

♦भारत टाइम्स♦

चित्तौड़गढ़ (अमित कुमार चेचानी)। लायंस क्लब चित्तौड़गढ ने डॉक्टर्स डे पर राजकीय सांवलिया हॉस्पिटल में सभी चिकित्स्कों व नर्सिंग स्टाफ का सम्मान समारोह किया। क्लब अध्यक्ष बसंती लाल वैद ने बताया की सीएमएचओ तारा चंद गुप्ता व पीएमओ डॉ .दिनेश वैष्णव की अध्यक्षता में 52 से अधिक डॉक्टर्स व 30 से अधिक नर्सिंग स्टाफ को सम्मानित किया. इस अवसर पर पी.एम.ओ. ऑफिस में डॉक्टर्स को शुद्ध जल हेतु आरओ प्लांट लायंस क्लब की ओर से भेंट किया। उक्त कार्यक्रम में सी.एम.एच.ओ. डॉ. तारा चंद गुप्ता व पी.एम.ओ. डॉ. दिनेश वैष्णव ने लायंस क्लब का आभार जताते हुए क्लब की भूरी भूरी प्रशंसा की। सभा का संचालन क्लब सचिव एस. एन. बंसल ने किया और साथ ही सभी डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टॉफ और लायन साथियों ने अल्पाहार किया. अंत में लायन्स क्लब चितौड़गढ़ ने सभी सम्मान समारोह में पधारे डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टाफ का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर लायन बसन्ती लाल वेद, लायन एस एन बंसल, लायन अशोक सोनी, लायन दीपक वैष्णव,लायन विजय सिंह नरूका, लायन मनजीत सिंह,लायन विष्णु सोनी, लायन सुनील अगाल, लायन हेमन्त सुखवाल लायन रामस्वरूप कालानी, लायन योगेश जी शर्मा, लायन आर सी शर्मा, रतन धाकड, शंभू गिरी उपस्थित रहे।

डॉक्टर्स डे पर सींडलिंग के विधाथीर्यों ने चिकित्सा के क्षेत्र में समर्पण,करुणा और सहानुभूति के प्रति पीएमसीएच के चिकित्सको का जताया आभार

♦भारत टाइम्स♦

उदयपुर। कहते हैं कि डॉक्टर इस धरती पर भगवान का दूसरा रूप होते हैं। वो डॉक्टर ही हैं, जो इंसान को मौत के मुंह से निकालकर नया जीवनदान देने का हर संभव प्रयास करते हैं। इसी कड़ी में डॉक्टर्स के इसी योगदान के प्रति आभार जताने और उन्हें सम्मान देने के उद्देश्य से आज डाक्टर्स डे के अवसर पर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में सींडलिंग स्कूल के 25 विधाथीर्यों ने चिकित्सकों को चॉकलेट एवं ग्रीटिंग कार्ड देकर तथा केक कटवा कर शुभकामनाएं दी एवं उनका अभिनन्दन किया। पीएमसीएच के ऐक्जिक्यूटिव डॉयरेक्टर अमन अग्रवाल ने बताया कि इस साल की थीम ह्य हीलिंग हैंड्स, केयरिंग हार्ट्स ह्य है। यह विषय डॉक्टरों द्वारा अपनी चिकित्सा पद्धति में लाए गए समर्पण, करुणा और सहानुभूति को उजागर करता है, जो जीवन को बचाने और बेहतर बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दशार्ता है। डाक्टर्स डे के इस अवसर पर सींडलिंग स्कूल के विधाथीयो ने पीएमसीएच का दौरा किया और मरीजों की जान बचाने और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए डॉक्टरों के प्रति अपनी कृतज्ञता की भावनाओं को साझा किया।

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की मार्मिक पहल 'एक व्यक्ति एक वृक्ष' अभियान को जिले में बनाएँ सफल

♦भारत टाइम्स♦

यादराम वर्मा गंगापुर सिटी। जिला कलक्टर डॉ. गौरव सैनी की अध्यक्षता में सोमवार को कलक्ट्रेट में सार्वजनिक आवश्यक सेवाओं से संबंधित जिला स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला कलक्टर ने वर्षा ऋतु लेकर की गई तैयारियों, वृक्षारोपण, पेयजल, विद्युत, सड़क, जलभराव, मौसमी बीमारी, संपर्क पोर्टल, ई-फाइलिंग निस्तारण समय, बजट घोषणा आदि के संबंध में चल रहे विभिन्न कार्यों का विस्तृत ब्यौरा लिया एवं आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किऐ वर्षा ऋतु को देखते हुए जिला कलक्टर ने राज्य सरकार की मंशा अनुरूप मा. मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की मार्मिक पहल 'एक व्यक्ति एक वृक्ष' अभियान को सफल बनाने के लिए तैयार की गई कार्ययोजना की समीक्षा की और निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पौधे वन विभाग के रेंजर धर्मवीर सिंह से प्राप्त करने के निर्देश समस्त विभागाध्यक्षों को दिये साथ ही निर्धारित लक्ष्य के अनुसार तय समय में पौधा रोपण सुनिचित

करने के निर्देश संबन्धित अधिकारियों को दिये जिला कलक्टर ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बी.एल. मीना से वर्षा ऋतु को देखते हुए मौसमी बीमारियों से बचाव एवं उपचार हेतु राजकीय अस्पतालों एवं स्वास्थ्य केन्द्रों पर की गई व्यवस्थाओं, आमजन को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, मच्छरों की रोकथाम हेतु नगर परिषद एवं पंचायती राज विभाग के साथ समन्वय बिठाकर किए जाने वाले छिड़काव, फोगिंग, सर्वेक्षण सहित अन्य संबन्धित कार्यों का विस्तृत ब्यौरा लिया एवं आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किऐ उन्होंने गुढाचंद्रजी में बी.सी.एम.ओ के चार्ज के प्रकरण को सक्षम विभागीय स्तर से मार्गदर्शन लेकर शीघ्र निस्तारित करने के लिए निर्देशित किया। साथ ही सभी स्तरों पर पीएचसी लेवल तक नगर परिषद के माध्यम से फायर एनओसी लेने के आदेश भी संबन्धित अधिकारियों को दिये पीएमओ डॉ. दिनेश चंद गुप्ता ने बताया कि प्रभारी सचिव श्री महेंद्र सोनी एवं जिला कलक्टर के निदेर्शों की अनुपालना में जिला चिकित्सालय में पीने के पानी के लिए चिलर प्लान्ट स्थापित कर दिया गया है जिसका आमजन भरपूर लाभ ले रहे हैं साथ ही मोचेंरी में कोल्ड रूम की भी व्यवस्था कर दी गई है। जिला कलक्टर ने नगर परिषद आयुक्त रिंकल गुप्ता से जिले के समस्त नालों की साफ-सफाई की वस्तुस्थिति का विस्तृत ब्यौरा लिया और साफ-सफाई से संबन्धित समस्त कार्यों को निष्पादित करने के निर्देश दिये साथ ही निचले क्षेत्र वाली जगहों को चिन्हित कर नियमित रूप से साफ सफाई एवं जल निकासी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें जिससे आमजन को जलभराव की स्थिति से शीघ्र निजात दिलाया जा सके जला कलक्टर ने मॉनसून को देखते हुए फार्म पॉण्ड के निर्धारित लक्ष्य को तय समय में पूर्ण करने के निर्देश कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक राधेश्याम मीना को दिये ।मीक्षा बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर रवि वर्मा, समस्त जिला स्तरीय अधिकारी, उपखण्ड अधिकारी अनूप सिंह कलेक्ट्रेट में वहीं अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी शैलेन्द्र सिंह सहित अन्य अधिकारी वीसी के माध्यम से उपस्थित रहे।

कर्नाटका सीरवी समाज वालीबॉल कप का हुआ आयोजन

येलहंका ए. ने जीती प्रतियोगिता

♦भारत टाइम्स♦

बेंगलुरू । येलहंका स्पोर्ट्स क्लब की ओर से शूटिंग वालीबॉल टूनोर्मेंट का आयोजन तावरेकेरे स्थित आईजी वाटिका मैदान में किया गया। जिसमें कुल 16 टीमों ने भाग लिया। इसमें फाईनल में येलहांका ए और के. आर. पेट मैसूर के बिच खेला गया ।जिसमें येलहंका ए. टीम विजेता रही। वही उपविजेता के. आर. पेट मैसूर रही । बेस्ट नेटर दिलीप, बेस्ट अटैकर रोकी बेस्ट सेंटर मुकेश, मैन ऑद द मैच सुरेश को दिया गया। बेस्ट सर्विस राहुल, इमेजिंग प्लेयर भरत। विजेता और उप विजेता टीम को कप प्रदान कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर येलहंका स्पोर्ट्स क्लब की ओर से यलहंका बडेर के अध्यक्ष मोहनलाल सैणचा , सचिव अशोक पंवार कोषाध्यक्ष भुण्डाराम राठौड़,सुंकदकट्टे बडेर के अध्यक्ष रूगाराम चोयल, सचिव हनुमान बर्फा सह -सचिव भंवरलाल गेहलोत का स्वागत किया गया । इस मौके पर चौथाराम पंवार प्रतापमल पंवार, चिमनाराम सोलंकी ,भेराराम पंवार का सम्मान किया गया ।येहलंका स्पोर्ट्स क्लब ए.टीम के कप्तान सुरेश चोयल बी.टीम के कप्तान अमरराम पंवार, मौजुद रहे। वही येलहांका ए. टीम के मुलाराम पंवार ने बताया की येलहंका स्पोर्ट्स क्लब के सभी खिलाड़ियों ने तन मन धन से सहयोग देकर टूनोर्मेंट आयोजन को सफल बनाया ।और उन्होनें कहा की कार्यक्रम बिना वाद विवाद शानदार सम्पन्न हुआ । सभी खिलाड़ियों ने बेहतर प्रदर्शन किया। सभी खिलाड़ियों को धन्यवाद ज्ञापित किया । टूनोर्मेंट में खिलाड़ियों के लिए खाने पिने व खेल समन्धित हर विषयों में बेहतरीन तरीके से व्यवस्था की गई। इस कार्यक्रम में आयोजकों का माला साफा द्वारा सम्मान किया गया । कार्यक्रम का मंच संचालन केंगरी वडेर के खेल मंत्री ढगलाराम लचेटा ने किया ।

शहीद बीरबल सिंह ढालिया की पुण्यतिथि मनाई

जीनगर समाज की 15 प्रतिभाओं का सम्मान किया

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। कस्बे में रविवार शाम को जीनगर समाज वेलफेयर सोसायटी बोरुंदा तहसील पीपाड़ शहर जोधपुर के तत्वाधान में अमर शहीद बीरबल सिंह ढालिया की 78 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर पुष्पांजली का कार्यक्रम रखा गया। साथ ही जीनगर समाज के 8वीं, 10वीं तथा 12वीं के पंद्रह प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष डॉ शंकरलाल सिसोदिया, उपाध्यक्ष पुखराज बायर, कोषाध्यक्ष डीसी सिरोही, सचिव नंद किशोर, ढगलचंद आर्य प्राचार्य, चौथाराम पूर्व सरपंच, गणपत लाल गोयल, सुमेर, दिनेश, कालूराम सांखला, सम्पतराज, हेमंत, आकाश, गिरधारी, ताराचंद, खुशी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। इस दौरान शहीद बीरबल सिंह ढालिया की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके बलिदान को याद किया गया। वहीं विद्यार्थियों को अधिक से अधिक परिश्रम करने की सीख देते हुए समाज व गांव का नाम रोशन करने की सीख देने के साथ-साथ सम्मानित होने वाले विद्यार्थियों से प्रेरणा लेने की बात कही।

एक शाम गौमाता के नाम रातभर बहीं भजनों की सरिता

♦भारत टाइम्स♦

चैन्नई। पुनमल्ली आउटर रिंग रोड स्थित सीरवी समाज बडेर ट्रस्ट पूनमल्ली के गौभक्तों द्वारा रविवार को आयोजित एक शाम गौमाता के नाम विशाल भजन संध्या का आयोजन हुआ, यह कार्यकर्म कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। मारवाड़ जंक्शन की धन्य धरा से पधारे राजस्थानी सुप्रसिद्ध भजन कलाकार पारसमल परिहार दुदौड़ एंड पार्टी ने एक से बढ़कर एक कर्णप्रीय भजनों की प्रस्तुति देकर सभागार को भक्तिमय बना दिया। गौभक्तों द्वारा गौमाता के संरक्षण एवम रक्षण हेतु लगभग दो लाख से ज्यादा की राशि संग्रहित की गई जो अपने आप में एक मिसाल हैं। आयोजन मंडल की ओर से इस अभूतपूर्व योगदान के लिए सभी गौभक्तों का दिल की गहराई से धन्यवाद देकर आभार जताया। इस समोरह में समाज सेवी एवं व्यापारी संघ के उपाध्यक्ष पारसमल चोयल नेमली, हनुमानराम, प्रवीण कुमार, मांगीलाल, सोहनलाल, कन्हैयालाल, तेजाराम, मगाराम, मांगीलाल, राजुराम, एवं दुर दराज से आए समस्त गौभक्त उपस्थित रहे।

आज से तीन नए आपराधिक कानून लागू: बर थाना प्रभारी और सरपंच महेंद्र चौहान ने आमजन को कानून के बारे में किया जागरुक

बर ग्राम पंचायत में भी बड़ी एलइडी पर मुख्यमंत्री के कानूनों से संबंधित वर्चुअल संवाद को प्रदर्शित किया गया बर थानाप्रभारी रोडू राम ने बताया कि थाना क्षेत्र में यह कार्यक्रम ग्राम पंचायत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बर थाना पुलिस , जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों व आमजन ने भाग लिया

♦भारत टाइम्स♦

बर कैलाश गुर्जर। एक जुलाई से पूरे देश मे 3 नए आपराधिक कानून लागू हो चुके हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जयपुर से वर्चुअल संवाद कर राजस्थान पुलिस के जवानों और आमजन को संबोधित करते हुए नए कानूनों की जानकारी दी। बर ग्राम पंचायत में भी बड़ी एलइडी पर मुख्यमंत्री के कानूनों से संबंधित वर्चुअल संवाद को प्रदर्शित किया गया बर थानाप्रभारी रोडू राम ने बताया कि थाना क्षेत्र में यह कार्यक्रम ग्राम पंचायत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बर थाना पुलिस , जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों व आमजन ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दौरान आमजन को कानून के प्रति जागरूक किया गया। वहीं मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के समापन के बाद सरपँच महेन्द्र चौहान के द्वारा आमजन को तीनों कानूनों की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि तीनों कानूनों का प्रदेश भर में पुलिस की ओर से व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार किया जा रहा है। बर थानाप्रभारी रोडू राम ने बताया कि बर ग्राम पंचायत में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को तीन कानूनों की बुनियादी जानकारी दी गई और कार्यक्रम के समापन के बाद सरपँच महेन्द्र चौहान द्वारा नए कानून से संबंधित आमजन की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए उनके सवालों के जवाब दिए गए। कार्यक्रम में यह रहे मौजूद थानाप्रभारी रोडू राम , बर सरपँच महेन्द्र चौहान , बिराटिया खुर्द सरपँच देवा काठात , बबलू सिंह , वार्डपंच राकेश तंवर , मोहन सिंह भाटी , खुम सिंह खेजड़ा , सूबेदार टीकम सिंह चौहान , बजे सिंह , गोपाल सिंह ,श्याम लाल बागड़ी , अशोक बागड़ी , नेमाराम गुर्जर , सुंदर नाथ , सुरेश चन्द , कार्यक्रम में बर पुलिस , उछऋ सदस्य , ग्राम रक्षक , पुलिस मित्र एवँ गणमान्य लोग मौजूद रहे। आदि मौजूद रहे।

रेलकर्मियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएं तीन से

क्षेत्रीय व अखिल रेल स्तरीय स्पधाओं के लिए होगा चयन

♦भारत टाइम्स♦

जोधपुर। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल पर राजभाषा अनुभाग की ओर से आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कर्मचारी मंगलवार तक आवेदन कर सकेंगे। जोधपुर मंडल रेल प्रबंधक पंकज कुमार सिंह ने बताया कि राजभाषा अनुभाग द्वारा क्षेत्रीय एवं अखिल रेल स्तर पर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना है जिसके लिए मंडल स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं से प्रतिभागियों का चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मंडल स्तर पर तीन जुलाई को 'राजभाषा के विकास में मीडिया की भूमिका' हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता,4 जुलाई को हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता तथा 5 जुलाई को ' वैश्विक तापमान बढ़ने के कारण व निवारण' विषयक हिंदी वॉक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। सहायक कार्मिक अधिकारी नरेंद्र सिवासिया ने बताया कि सभी प्रतियोगिताएं मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय सभा कक्ष में निर्धारित तिथियों को अपराह्न 4 बजे से होगी जिसके लिए रेलवे अधिकारी व रेलकर्मचारी दो जुलाई तक राजभाषा अनुभाग में अपने नाम भिजवा सकेंगे।

विप्र सेना ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के खिलाफ कलेक्टर को सौपा ज्ञापन

♦भारत टाइम्स♦

(जितेश चौहान) पाली। विप्र सेना पाली ने आईपीएस अधिकारी रवि दत्त गौड़ के लिए अपशब्दों का प्रयोग करने पर पूर्व शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा के खिलाफ राज्यपाल महोदय के नाम ज्ञापन सौंप कर अपना विरोध जताया। विप्र सेना के जिला प्रवक्ता नरेन्द्र तिवाड़ी ने बताया की जिला प्रभारी अमित त्रिवेदी तथा जिलाध्यक्ष मुकेश नाबरिया के नेतृत्व मे बड़ी संख्या में कार्यकर्ता इकठ्ठे हुए। कार्यकर्ताओ ने गोविंद सिंह डोटासरा के मुदार्बाद के नारे लगाए। साथ ही चेतावनी देते हुए कहा कि गोविंद सिंह डोटासरा आईपीएस रवि दत्त गौड़ के लिए दिए गए बयान पर सार्वजनिक रूप से माफी मांगे नहीं तो पूरे प्रदेश ही नहीं पूरे देश भर में भारी विरोध प्रदर्शन कर उनकी खत्म होती राजनीति पर

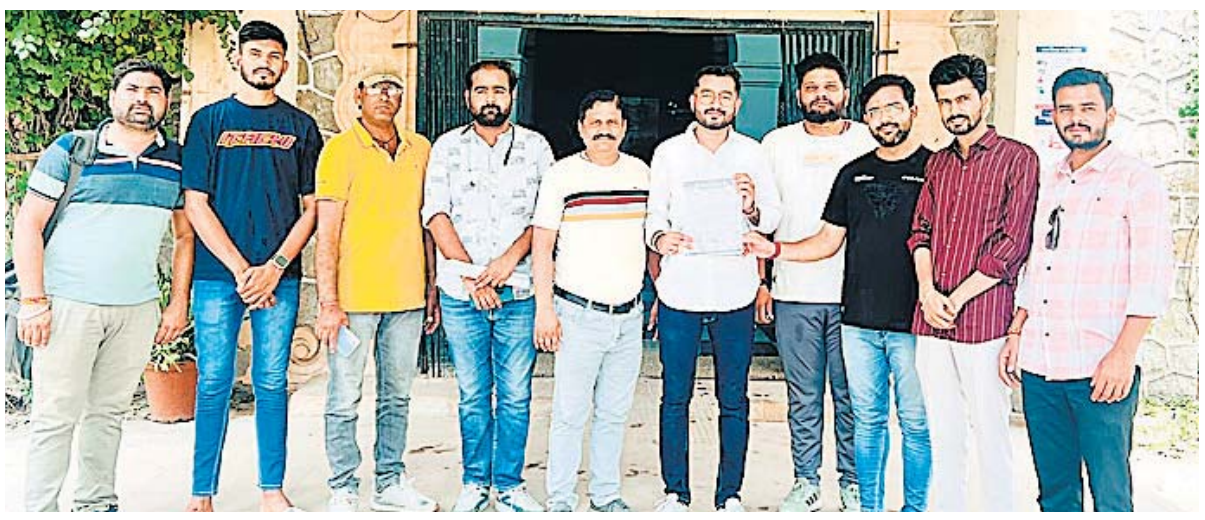

पूर्ण विराम लगा दिया जाएगा। पूर्व शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने आईपीएस रवि दत्त गौड़ के लिए कहा था की उनको उनकी औकात याद दिलादी जाएगी और उनकी घुटनों पर चलाने का काम करेंगे। साथ ही उसका जीना हराम कर दिया जाएगा। इस बात का पूरे प्रदेश भर में ब्राह्मण समाज में भारी विरोध है। ज्ञापन सौंपते हुए जिलाध्यक्ष मुकेश नाबरिया ने कहा कि गोविंद सिंह डोटासरा खुद एक भ्रष्टाचार का पुतला है, जिन पर कई भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। अशोक स्तंभ के नीचे पुलिस की वर्दी पहन कर देश की सेवा कर रहे आईपीएस अधिकारी रवि दत्त गौड के लिए भरे मंच पर बोले गए शब्द उनकी मानसिकता और चरित्र को प्रदर्शित करते है। ऐसे व्यक्ति के खिलाफ सरकार को अतिशीघ्र कार्यवाही करनी चाहिए। इस दौरान विप्र सेना के जिला महामंत्री आशीष तिवाड़ी, शहर अध्यक्ष ऋतिक दवे, मनीष दाधीच, राकेश जोशी, विक्की गौड़, शरद पांडे, लवलेश शर्मा, परमेश्वर शर्मा, राजेंद्र शर्मा, दीपक शर्मा, पुष्पेंद्र उपाध्याय, पुनीत दवे, अर्जुन पंचारिया, डेविल शर्मा, अमित जोशी, मनोहर पंचारिया, संजय पंचारिया, विजयंत उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहे।

नैतिक शिक्षण की शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में अनिवार्यता

फेसर (डॉ.) किरण त्रिपाठी
(शिक्षाविद् व साहित्यकार)
नई दिल्ली।

> आज आवश्यकता है मानवीय नैतिक मूल्यों को भावना में उतारने की, उन्हें आचरण का आधार बनाने की। हमारा समाज में बच्चे-बच्चे की जबान पर सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य विराजमान है।

नैतिक मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है। इसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है, जो कि निर्धारित और निर्देशित करता है। नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है। यदि एक देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से रहित होगा, तो उस देश का कभी विकास नहीं हो सकता। लेकिन विडंबना है कि यह नैतिक मूल्य हमारे जीवन से धुंधले होते जा रहे हैं। चोरी, डकैती, हत्याएँ, धोखा-धड़ी, जालसाजी, बेईमानी, झूठ, दूसरों और बड़ों का अनादर, गंदी आदतें नैतिक मूल्यों में आई कमी का परिणाम है। हमें चाहिए कि नैतिक शिक्षा के मूल्य को पहचाने और इसे अपने जीवन में विशेष स्थान दें। छात्र - अध्यापकों का नैतिक स्तर ऊंचा उठाने के लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित अध्यापक शिक्षा देने की जरूरत है। शिक्षकों को न केवल यह बात समझनी होगी, बल्कि इसे गंभीरता से लेते हुए अपनी शिक्षा पद्धति में उतारना होगा। मानवतावादी भारतीय चिन्तक मानवीय मूल्यों की शिक्षा की बात करते है। भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम' में विश्वास करता है अतः यहाँ नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए जिनके पालन से मनुष्य जाति का समग्र रुप से भला हो। इनका विश्वास है कि इन मूल्यों के पालन से ही शोषण रहित मानव समाज और युद्ध रहित विश्व समुदाय का निर्माण हो सकता है। इन नैतिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा से भारत में ही क्या पूरे संसार में दी जानी चाहिए। समाज कोई भी हो वह मूलभूत नैतिक मूल्यों पर आधारित होता है। इनके अभाव में कोई समाज जीवित नही रह सकता। इनकी शिक्षा से सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि एक दिन भारत की सम्पूर्ण जनता 'भारतीय समाज' के रूप में बँध-गुँथ जाएगी। मनुष्य के आचार-विचार को सही दिशा देने के लिए नैतिक मानवीय मूल्य शिक्षा आवश्यक है। समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श एवं मानदण्डो को अपने अन्तःकरण में न उतारने और उनके अनुसार आचरण न करने से आज हमारे देश में ही नही बल्कि पूरे संसार में मानवीय नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। आज स्थिति यह है कि हमें मानवीय नैतिक मूल्यों का ज्ञान तो है परन्तु वे हमारे भावात्मक पक्ष के अंग नहीं है। तब उनके अनुसार आचरण करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

मानवीय नैतिक मल्यों की शिक्षा की आवश्यकता-

आज आवश्यकता है मानवीय नैतिक मूल्यों को भावना में उतारने की, उन्हें आचरण का आधार बनाने की। हमारे समाज में बच्चे-बच्चे की जबान पर सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य विराजमान है। प्रेम, दया, दान, सहयोग और सेवा इन सबसे भी हम परिचित हैं, पर कितने लोग इन्हें अपने जीवन में अपनाते है। मानवीय नैतिक मल्यों की शिक्षा की व्यवस्था होनी ही चाहिए। आज के भौतिकतावादी युग में नैतिक मानवीय मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। हिंसा, व्यभिचार, अहंकार, छल, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, मद, आलस्य, अधर्म, लोभ, अन्याय, काम, क्रोध, आवेश, निन्दित कमानुष्ठान एवं क्रोधानता आदि अवगुणों से संलग्न हुआ मानव

पृथ्वी पर भार स्वरूप है। मानवीय नैतिक मूल्यों के हनन से नृशंस हत्याएँ, व्याभिचार, अत्याचार, हिंसा, दुराचार, कुचक्र एवं घृणित राजनीति इत्यादि के परिणाम हमारे सम्मुख है। मनुष्य तनावपूर्ण जीवन जी रहा है यदि हम समय रहते नहीं चेते तो वह दिन दूर नहीं जब हम बर्बरता के युग में प्रवेश कर जाएंगे। यदि हम मानव सभ्यता और संरक्षित की सुरक्षा चाहते है तो हमे मानवीय नैतिक मूल्य शिक्षा पर बल देना होगा। आज ऐसी शिक्षा की आवश्कता है, जो पूरे समाज और देश में नैतिकता उत्पन्न कर सके। यह नैतिकता नैतिक शिक्षा के द्वारा ही उत्पन्न की जा सकती है। नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अध्यापक छात्रों में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं। नैतिक शिक्षा दी जानी इसलिए आवश्यक है, क्योंकि वह छात्रों में अनेक अच्छे गुणों और आदतों का निर्माण करती है, यथा-उत्तरदायित्व की भावना, सत्य की खोज, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति, जीवन-दर्शन का निर्माण, आध्यात्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इत्यादि। अध्यापक शिक्षा के प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दिया जाना चाहिए। नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। छात्रों में नैतिकता का विकास करने के लिए शिक्षण संस्थान अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते है।

अध्यापक ही नैतिक मूल्यों के विकास का आधार- आज आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान-आधारित विकास को जीवन-शक्ति हमारे नैतिक एवं आध्यात्मिक आधारों से प्राप्त हो। इसीलिये अध्यापक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश होना बहुत जरूरी है, क्योंकि अध्यापक शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व, चारित्रिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास की शिक्षा है। अध्यापक की गुणवत्ता का विकास अध्यापक शिक्षा से ही होता है। अध्यापक ही नैतिक मूल्यों के विकास का आधार है। आज मानव, मानव के लिए विश्वबन्धुत्व की भावना को तिरस्त कर कष्ट साध्य बन चुका है। विश्व-शान्ति एवं कल्याण के लिए मानवीय नैतिक मूल्य शिक्षा की आवश्कता है। व्यक्ति में मानवीय मूल्यों के पुनर्स्थापन एवं अकरणीय क्रियाओं के मार्गान्तिकरण की आवश्कता है। मानवीय नैतिक मूल्यों की रिक्तता एक प्रश्न बनकर उद्वेलित कर रही है। इस युग में हमारे देश सहित अन्य देशों में जितने भी शिक्षा आयोग और शिक्षा समितियों का गठन हुआ है, सभी ने किसी न किसी रूप में मानवीय नैतिक मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है। हमारे देश में ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी नैतिक मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में खूब विचार-विमर्श हुआ है और आज भी हो रहा है। इस दिशा में एन०सी०ई०आर०टी० और एस०सी०ई०आर०टी० का योगदान महत्वपूर्ण है। इन सभी का एक ही निर्णय है और वह यह है कि आज नैतिक मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है और इस दिशा में शिक्षक और शिक्षण संस्थानों को विशेष भूमिका निभानी चाहिए। गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती है। शिक्षा में सुधार के द्वारा ही इन्हें सुधारा जा सकता है।

मानवीय नैतिक मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता- शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अंतर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेमपूर्वक जीवनयापन करना सीखें। शिक्षा से ऐसा मनुष्य बनाना है जो स्वयं स्वेच्छा से शाश्वत नैतिक मूल्यों के पालन का प्रयास करे, जिससे व्यक्ति, समाज सभी का कल्याण सम्भव हो, तभी नैतिक मूल्यों का धराशायी वृक्ष पुनः खड़ा हो सकता है। भारतीय संविधान नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में जो मूल्य बताए गए हैं उन्हें शिक्षा द्वारा छात्रों के जीवन में उतारा जा सकता है। वे मूल्य है - प्रजातन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, न्याय, सहिष्णुता, व्यक्ति की गरिमा, विचार, अभिव्यक्ति आदि। ईमानदारी, उपकार, विनम्रता, निस्वार्थता, समभाव, मन, वचन, कर्म की एकता आदि गुणों व मानवीय मूल्यों को छात्रों को अपने जीवन में उतारना है। बालक को मानवीय नैतिक मूल्यपरक शिक्षा देनी चाहिए। वर्तमान समय में मानवीय नैतिक मूल्यों को बताने के लिए मात्र उपदेश ही पर्याप्त साधन नहीं है। इसके लिए अनुभूति, चिन्तन तथा कियान्विति आवश्यक है। मानवीय नैतिक मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षार्थएँ को अनुभव से जोड़ना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में विभिन्न महापुरुषों की जयन्तियो, धार्मिक उत्सवों का आयोजन करना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में समय-समय पर भाषण, संगोष्ठी, निर्देशन, ट्यूटोरियल आदि को अपनाया जा सकता है। शिक्षक का व्यवहार वैयक्तिक नैतिक मूल्यपरक शिक्षण तभी दे सकता है, जब उसमें स्वयं अच्छे नैतिक मूल्य विकसित होंगे। शिक्षक अपने छात्रों के लिए एक आदर्श होता है, इसलिए शिक्षक का चरित्र उच्च तथा नैतिकता से परिपूर्ण होना चाहिए, तभी वह अपने शिष्यों में सच्चाई, ईमानदारी, सहनशीलता, कार्यनिष्ठा तथा लगन आदि चारित्रिक गुणों का विकास कर सकता है। नैतिक मूल्यों के विकास हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति सामने आई है।

नई शिक्षा नीति ने शिक्षा की प्रक्रिया का पुनःअभिविन्यास करने का प्रयास किया है। युवको को यह अनुभव कराया जाए कि किस तरह से वे शोषण, असुरक्षा को रोक सकते हैं। शिक्षा द्वारा छात्र में सत्य, सहयोग, कर्तव्यपरायणता आदि का विकास हो। वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्य संबंधी अंशो को बढाना चाहिए, पाठ्यपुस्तकों में भी नैतिक मूल्य सम्बन्धी अंश होने चाहिए। वर्तमान समाज में मानवीय नैतिक मूल्यों का ह्रास शिक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती है जिसे स्वीकार करके शिक्षा को ही मानवीय नैतिक मूल्यों का विकास छात्रों में करना होगा। शिक्षा में सुधार द्वारा ही इन मानवीय मूल्यों के हनन को रोका जा सकता है। राष्ट्र और समाज के विकास के लिए छात्रों में मानवीय नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक मूल्य शिक्षा ही प्रमुख साधन है। भाषा शिक्षण सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकों में प्रायः नीति संबंधी लेख व कविताएँ संकलित होती है, महापुरुषों की जीवनी संकलित होती है और वीर व शोर्य के प्रसंग संकलित होतें हैं। इनमें समाज के समस्त विश्वास, आदर्शों और सिद्धांतो का समावेश होता है इनका सीधा प्रभाव बच्चे के हृदय पर पड़ता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे भाषा की पाठ्यपुस्तकों के किसी भी पाठ को पढ़ाते समय उसमें निहित आदर्शों और सिद्धांतो को बच्चे के सामने उजागर करे, उनके प्रति अनुकूल अनुकिया करें, मानवीय नैतिक मूल्य प्रधान घटनाओं एवं आचरण की प्रशंसा करे, गैरमूल्य आचरण के विरोध में अपनी सम्मति प्रकट करे और यह सब बच्चों की सकिय भागीदारी के बीच करे। छात्रों के मानवीय नैतिक मूल्यों के विकास में जितना महत्व पाठ्यचारी क्रियाओं का है उतना ही महत्व सहपाठ्यचारी क्रियाओं का है।

शिक्षा में नैतिक मूल्य का स्थान सर्वोपरी- मानवीय नैतिक मूल्यों की शिक्षा से इनमें सर्वाधिक महत्व प्रातःकालीन सभा और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं का होता है। प्रायः सभी शिक्षण संस्थानों का शुभारम्भ प्रातः कालीन सभा से होता है। ईश्वर प्रार्थना छात्रों को सद् मार्ग की ओर उन्मुख करती है। ईश्वर प्रार्थना के बाद 10 मिनट प्रेरक प्रसंगों के लिए दिए जाने चाहिए इससे छात्रों को मानवीय नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिलेगी। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाषण, वाद-विवाद, कवि दरबार और कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रमों का महापुरुषों के जन्मोत्सव, राष्ट्रीय उत्सवों आदि पर आयोजन कर छात्रों को मानवीय नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने में शिक्षक सफल हो सकता है। समाज सेवा कार्यों द्वारा भी शिक्षक छात्रों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दे सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे भी छात्रों के साथ स्वयं सेवा कार्यों में जुटे। तब बच्चे उनसे समाज सेवा का सच्चा पाठ पढ़ेगे। वर्तमान समय में शिक्षण की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल हो गई है। प्रत्येक स्तर पर योग्य एवं कुशलता प्राप्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को तैयार करने का दायित्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का रहा है, किन्तु इस क्षेत्र में ऐसी अनेकानेक ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई है, जिनकी वजह से शिक्षा कार्यक्रम माध्यम से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कठिनतर होती जा रही है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक चुनौतियाँ दिन-प्रतिदिन सृजित और विकसित हो रही है। जिनका सामना करना प्रत्येक आदर्श अध्यापक का उत्तरदायित्व हो जाता है। नैतिक मूल्यों में समय के साथ अंतर आ रहा है। नैतिक मूल्य इतने गिर गये है कि जीवन जीने का अर्थ ही बदल गया है।

जोखिम की इमारतें और आम लोगों का जीवन, तकनीकी से निर्माण में आई तेजी लेकिन टिकने का भरोसा नहीं

लोहे के खंभों को नट-बोल्ट से जोड़ कर बनाए गए ढांचे की समय-समय पर मरम्मत जरूरी होती है, जिसका प्रायः अभाव देखा जाता है। बहुत सारी इमारतें, सड़कें और पुल सरकार के दबाव में जल्दी तैयार कर दिए जाते हैं, इस वजह से भी इमारतें जोखिम भरी साबित होती हैं। दिल्ली एयरपोर्ट पर हादसा। भवन, पुल, सड़कों आदि के निर्माण में तकनीकी उपयोग से तेजी तो आई है, ढांचे मनोहारी बनने लगे हैं, मगर उनकी मजबूती और टिकाऊपन को लेकर अक्सर सवाल उठते रहते हैं। अब शायद ही कोई वर्ष बीतता हो, जब बरसात में पुलों, सड़कों, नवनिर्मित भवनों के धंसने, ढहने की खबरें न आती हों। ताजी घटना दिल्ली के इंदिरा गांधी हवाई अड्डे के टर्मिनल-एक की है, जहां गाड़ियों के ठहराव वाली जगह की छत ढह गई, जिसमें कई गाड़ियों को नुकसान पहुंचा, एक व्यक्ति की मौत हो गई और कई घायल हो गए। बताया जा रहा है कि बारिश की वजह से छत बैठ गई। यह तो इस मौसम की पहली बारिश थी, अभी पूरा मौसम बाकी है, इसलिए हवाई अड्डे की दूसरी छतों को लेकर भी लोगों में आशंका पैदा होना स्वाभाविक है। दरअसल, हवाई अड्डे की छत लोहे के खंभे खड़े कर सिंथेटिक और लोहे की पतली चादरों से बनाई गई है। इस तरह जगह तो काफी खुली हो गई है और सुंदर भी दिखती है, मगर इसके टिकाऊपन को लेकर कोई दावा करना मुश्किल है। यह कोई पहली इमारत नहीं है, जिसमें इस निर्माण कला का उपयोग किया गया है। अब बहुत सारी सार्वजनिक जगहों पर जल्दी काम पूरा करने के मकसद से यही तकनीक इस्तेमाल होने लगी है। दरअसल, भवन निर्माण में कांच,

लोहे, सिंथेटिक चादरों वगैरह का इस्तेमाल काफी तेजी से बढ़ा है। इस तरह इमारतें जल्दी तैयार हो जाती हैं, मगर न तो यह भारतीय प्रकृति के अनुकूल है और न इन्हें लंबे समय तक टिकाऊ माना जा सकता है। लोहे के खंभों को नट-बोल्ट से जोड़ कर बनाए गए ढांचे की समय-समय पर मरम्मत जरूरी होती है, जिसका प्रायः अभाव देखा जाता है। बहुत सारी इमारतें, सड़कें और पुल सरकार के दबाव में जल्दी तैयार कर दिए जाते हैं, इस वजह से भी इमारतें जोखिम भरी साबित होती हैं। दिल्ली हवाई अड्डे पर हुई घटना के कुछ घंटे पहले मध्यप्रदेश के जबलपुर में भी हवाई टर्मिनल की नई इमारत की छत का एक हिस्सा बारिश की वजह से एक गाड़ी पर गिर गया। बारिश शुरू होते ही बिहार में कई पुल ढह गए। पिछले कई वर्षों से मध्यप्रदेश, बिहार आदि में पुलों के बाढ़ में बह जाने, सड़कों के धंस या बह जाने की खबरें आती रही हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब इमारतें जल्दी तैयार करने की हड़बड़ी में उनकी जल निकासी, छतों की मजबूती आदि पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया और बरसात शुरू होते ही उनकी पोल खुल गई। यह समझना मुश्किल है कि तकनीकी इस्तेमाल से जहां निर्माण कार्यों में मजबूती आनी चाहिए, वे इतने भुरभुरे क्यों साबित हो रहे हैं कि बारिश का हल्का दबाव भी झेल नहीं पा रहे। इसकी एक वजह तो साफ है कि निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार के कारण निर्माण सामग्री की गुणवत्ता से समझौता किया जाता है। मगर यह सब ऐसी व्यवस्था में बढ़ रहा है, जो भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त न करने के दावे करती है। आमतौर पर हवाई अड्डा और वहां के समूचे परिसर को सबसे सुरक्षित जगहों में शुमार किया जाता है, जहां हुए निर्माण से लेकर सुरक्षा व्यवस्था तक के मोर्चे को पूरी तरह चाक-चौबंद माना जाता है। मगर बारिश ने इस बात की कलई खोल कर रख दी है। इस तरह इमारतों, पुलों, सड़कों के बारिश में ढह या बह जाने से न केवल बड़े पैमाने पर सार्वजनिक धन भी बह जाता है, आम लोगों की परेशानियां और बढ़ जाती हैं, इससे जान-माल का नुकसान होता है, सो अलग।

संपादकीय

दिल्ली शराब घोटाला और जांच की आंच, आसान नहीं लग रही केजरीवाल की रिहाई

कथित शराब घोटाला मामले को राजनीतिक रंग दे दिया गया है और इसे लेकर अभी तक कोई पुख्ता प्रमाण सामने नहीं आ सका है, इसलिए लोगों में भ्रम बना हुआ है। आम आदमी पार्टी और भाजपा एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाती रहती हैं। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल। राजधानी दिल्ली में हुए कथित शराब घोटाले की जांच अब बहुकोणीय हो गई है। पहले प्रवर्तन निदेशालय ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को इस मामले में गिरफ्तार किया था, अब केंद्रीय जांच एजंसी यानी सीबीआइ ने भी उन्हें हिरासत में ले लिया है। सीबीआइ का कहना है कि दिल्ली की आबकारी नीति बनाने में दक्षिण भारत का एक समूह शामिल था और उससे केजरीवाल जुड़े हुए थे। मामले को सियासी हथकंडा करार दे रही है आम आदमी पार्टी इस मामले में बड़ी साजिश का पता लगाने के लिए केजरीवाल का सबूतों से आमना-सामना कराना और उनसे पूछताछ जरूरी है। अदालत ने सीबीआइ की इस दलील को उचित मानते हुए केजरीवाल की तीन दिन की हिरासत मंजूर कर दी। माना जाता है कि सीबीआइ को कुछ पुख्ता सबूत हाथ लगे होंगे, तभी उसने हिरासत की मांग की। मगर हमेशा की तरह आम आदमी पार्टी इस मामले को सियासी हथकंडा करार दे रही है। कुछ दिनों पहले दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत ने केजरीवाल को जमानत दे दी थी। उसने प्रवर्तन निदेशालय के पास केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ पुख्ता सबूत न होने को लेकर नाराजगी भी जताई थी। मगर प्रवर्तन निदेशालय ने उस जमानत आदेश के खिलाफ उच्च न्यायालय में गुहार लगाई और जमानत पर स्थगन आदेश मिल गया। इसे लेकर अभी चचाएं चल ही रही थीं कि सीबीआइ ने केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया। पूरा मामला रहस्य के पर्दे में है, जांच की जद में कुछ और नेता दिल्ली शराब घोटाले की सच्चाई अभी रहस्य के पर्दे में है। आम आदमी पार्टी के कई नेता इसकी जांच की जद में आ चुके हैं। उपमुख्यमंत्री रहे मनीष सिसोदिया लंबे समय से जेल में हैं। संजय सिंह जेल जाकर आ चुके हैं। कयास लगाए जाते हैं कि और भी कुछ नेताओं तक इस जांच की आंच पहुंच सकती है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को अवैध ठहराने की कानूनी लड़ाई चल रही है। उन्हें सर्वोच्च न्यायालय ने आम चुनाव के दौरान प्रचार करने के लिए मोहलत दी थी, पर फिर उन्हें जेल जाना पड़ा। अब सीबीआइ ने एक नया सिरा पकड़ लिया है, तो केजरीवाल की रिहाई आसान नहीं लगती। केजरीवाल ने अभी तक मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया है। चूंकि ऐसा कानूनी प्रावधान नहीं है कि किसी व्यक्ति को किसी आरोप में गिरफ्तारी से पहले इस्तीफा देना अनिवार्य है, इसलिए उन्होंने अपने पद पर बने रहने का फैसला किया। मगर सार्वजनिक जीवन में सब कुछ कानून से नहीं चलता, जनभावनाएं भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। आम लोगों की यही अपेक्षा रहती है कि अगर किसी बड़े पद का निर्वाह कर रहे व्यक्ति पर कोई गंभीर आरोप लगे, तो वह नैतिक आधार पर खुद को उस पद से अलग कर ले।

अस्था...

12 साल बाद बनेगा गुरु और मंगल का संयोग, इन राशियों की चमकेगी किस्मत, करियर में तरक्की के साथ हर क्षेत्र में मिलेगी सफलता...

वैदिक ज्योतिष अनुसार मंगल और गुरु की युति वृष राशि में बनने जा रही है। जिससे कुछ राशियों का गोल्डन टाइम शुरू हो सकता है... मंगल और गुरु की युति वृष राशि में बनेगी- वैदिक ज्योतिष अनुसार देवताओं के गुरु बृहस्पति ने 12 साल बाद वृष राशि में संचरण कर रहे हैं और वहीं ग्रहों के सेनापति जुलाई की शुरूआत में मेष राशि से निकलकर वृष राशि में भ्रमण करेंगे। जिससे वृष राशि में मंगल और गुरु ग्रह की युति बनेगा। जिससे जिससे कुछ राशियों के अच्छे दिन शुरू हो सकते हैं। साथ ही धन- संपत्ति में बढ़ोतरी हो सकती है। आइए जानते हैं ये भाग्यशाली राशियां कौन सी हैं 5 साल बाद कर्क राशि में बनेगा सूर्य और शुक्र का संयोग, इन 3 राशि वालों की पलटेगी किस्मत, करियर और कारोबार में मिलेगी तरक्की मेष राशि आप लोगों के लिए गुरु और मंगल की युति लाभकारी साबित हो सकती है। क्योंकि यह युति आपकी राशि से धन और वाणी भाव पर बनने जा रही है। इसलिए इस दौरान आपको समय- समय पर आकस्मिक धनलाभ हो सकता है। साथ ही आपके सम्?मान में वृद्धि होगी। प्रतिष्ठित लोगों से आपका मेलजोल बढ़ेगा और इसका सीधा लाभ आपको करियर में मिलेगा। वहीं इस दौरान व्यापारियों को अटका हुआ धन मिलेगा। साथ ही इस अवधि में आपकी वाणी में प्रभाव बढ़ेगा। जिससे लोग प्रभावित होंगे। मकर राशि गुरु और मंगल का संयोग मकर राशि के जातकों को अनुकूल सिद्ध हो सकता है। क्योंकि यह संयोग आपकी गोचर कुंडली के पंचम भाव में बनने जा रहा है। इसलिए इस समय आपको संतान से जुड़ा कोई शुभ समाचार मिल सकता है। मतलब संतान की जॉब लग सकती है या विवाह हो सकता है। वहीं इस समय आपकी आय में भी इजाफा होगा। साथ ही नौकरी पेशा जातकों के करियर में अच्छी तरक्की होगी और सैलरी वृद्धि के कई अवसर प्राप्त होंगे। वहीं जो लोग संतान प्राप्ति के इच्छुक हैं, उनको संतान प्राप्त हो सकती है। कुंभ राशि आप लोगों के लिए गुरु और मंगल का संयोग अनुकूल साबित हो सकता है। क्योंकि यह संयोग आपकी राशि से चतुर्थ भाव पर बनने जा रहा है। इसलिए इस समय आपकी सुख-सुविधाएं में वृद्धि होगी। साथ ही आप वाहन या प्रापर्टी खरीद सकते हैं। वहीं इस समय आपको नौकरी और व्यापार में अच्छी तरक्की मिल सकती है। क्योंकि इस योग की दृष्टि आपके कर्म भाव पर पड़ रही है। वहीं इस समय उन लोगों को विशेष लाभ हो सकता है, जिन लोगों का व्यापार प्रापर्टी, रियल स्टेट और जमीन जायदाद से जुड़ा हुआ है।

आज का राशिफल

मेषः चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

मेषः आज आपकी सेहत पूरी तरह अच्छी रहेगी। अपने धन का संचय कैसे करना है यह हुनर आज आप सीख सकते हैं और इस हुनर को सीख कर आप अपना धन बचा सकते हैं। बच्चे और परिवार दिन का केंद्र-बिंदु रहेंगे। समय, कामकाज, पैसा, यार-दोस्त, नाते-रिश्ते सब एक ओर और आपका प्यार एक तरफ, दोनों आपस में खोए हुए - कुछ ऐसा मिजाज रहेगा आपका आज। कार्यक्षेत्र में आपके प्रतिद्वन्द्वियों को अपने गलत कामों का फल मिलेगा। दिन को कैसे अच्छा बनाया जाए इसके लिए आपको अपने लिए भी समय निकालना सीखना होगा।

वृषभ : उ, ई, ऐ, ओ, बा, बी, बे, बो ।

वृषभः शारीरिक बीमारी के सही होनी की काफी संभावनाएँ हैं और इसके चलते आप शीघ्र ही खेल-कूद में हिस्सा ले सकते हैं। जिन लोगों ने अतीत में अपना धन निवेश किया था आज उस धन से लाभ होने की संभावना बन रही है। दिन के दूसरे हिस्से में कुछ दिलचस्प और रोमांचक काम करने के लिए बढ़िया वक़्त है। प्यार बहार की तरह है; फूलों, रोशनी और तितलियों से भरा हुआ। आज आपका रोमानी पहलू उभरकर आएगा। कार्यक्षेत्र में किसी विशेष व्यक्ति से आपकी मिलाकात हो सकती है। यात्रा करना फायदेमंद लेकिन महंगा साबित होगा।

मिथुनः क, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा ।

मिथुनः नफरत की भावना महंगी पड़ सकती है। यह न केवल आपकी सहन-शक्ति घटाती है, बल्कि आपके विवेक को भी जंग लगा देती है और रिश्तों में हमेशा के लिए दरार डाल देती है। जो लोग अपने करीबियों या रिश्तेदारों के साथ मिलकर बिजनेस कर रहे हैं उन्हें आज बहुत सोच समझकर कदम रखने की जरुरत है नहीं तो आर्थिक नुक्सान हो सकता है। आपसी संवाद और सहयोग आपके और आपके जीवनसाथी के बीच रिश्ते को मजबूत बनाएगा।

कर्क : ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो ।

कर्कः प्रभावशाली लोगों का सहयोग आपके उत्साह को दोगुना कर देगा। आज अगर आप दूसरों की बात मानकर निवेश करेंगे, तो आर्थिक नुकसान तकरीबन पक्का है। लोगों के साथ ठीक तरह से पेश आएँ, खास तौर पर उनके साथ जो आपसे प्यार करते हैं और आपका खयाल रखते हैं। दूसरों को खुशियाँ देकर और पुरानी गलतियों को भुलाकर आप जीवन को सार्थक बनाएंगे। आपको पता लग सकता है कि आपके बॉस आपसे इतने रूखेपन से क्यों बात करते हैं। वजह जानकर आपको वाकई तसल्ली होगी।

सिहंः मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे ।

सिंहः झगड़ालू स्वभाव को काबू में रखें, नहीं तो रिश्तों में कभी न मिटने वाली खटास पैदा हो सकती है। इससे बचने के लिए अपने नजरिए में खुलापन अपनाएँ और पूर्वाग्रहों को छोड़ें। अपने धन का संचय कैसे करना है यह हुनर आज आप सीख सकते हैं और इस हुनर को सीख कर आप अपना धन बचा सकते हैं। आपसी संवाद और सहयोग आपके और आपके जीवनसाथी के बीच रिश्ते को मजबूत बनाएगा। आज अपने खूबसूरत कामों को दिखाने के लिए आपका प्रेम पूरी तरह खिलेगा। नयी योजनाओं को शुरू करने के लिए बढ़िया दिन है।

कन्याः टो, पा, पी,पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

कन्याः दूसरों के साथ खुशी बांटने से सेहत और खिलेगी। अगर आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को सही तरीके से इस्तेमाल करें तो वह काफी फायदेमंद साबित होगी। घरेलू काम थका देने वाला होगा और इसलिए मानसिक तनाव की वजह भी बन सकता है। आप साथ में कहीं घूमने-फिरने जाकर अपने प्रेम-जीवन में नयी ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। सहकर्मियों के साथ काम करते वक़्त युक्ति और चतुरता की जरूरत होगी। वक्त से हर काम को पूरा करना ठीक होता है अगर आप ऐसा करते हैं तो आप अपने लिए भी वक्त निकाल पाते हैं।

तुलाः रा, री, रू, रे, ता, ती, तू, ते ।

तुलाः आज का दिन ऐसे काम करने के लिए बेहतरीन है, जिन्हें करके आप खुद के बारे में अच्छा महसूस करते हैं। व्यापारियों को आज व्यापार में घाटा हो सकता है और अपने व्यापार को बेहतर बनाने के लिए आपको पैसा खर्च करना पड़ सकता है। कुछ लोग जितना कर सकते हैं, उससे कई ज्यादा करने का वादा कर देते हैं। ऐसे लोगों को भूल जाएँ जो सिर्फ गाल बजाना जानते हैं और कोई परिणाम नहीं देते। प्यार-मोहब्बत की नजरिए से बेहतरीन दिन है। प्यार का मजा चखते रहें। आज के दिन कार्यालय का माहौल बढ़िया बना रहेगा।

वृश्चिकः तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू ।

वृश्चिकः आज आपके पास अपनी सेहत और लुक्स से जुड़ी चीजों को सुधारने के लिए पर्याप्त समय होगा। आर्थिक रुप से आज आप काफी मजबूत नजर आएंगे, ग्रह नक्षत्रों की चाल से आज आपके लिए धन कमाने के कई मौके बनेंगे. माता-पिता के साथ अपनी खुशियाँ साझा करें। उन्हें महसूस करने दें कि आपके लिए उनकी कितनी अहमियत है, इससे उनका अकेलेपन का एहसास अपने आप खत्म हो जाएगा। हमारी जिंदगी का क्या फायदा, अगर हम एक-दूसरे का जीवन आसान न बना सकें।

धनु : ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे ।

धनुः अपनी क्षमताओं को पहचानें, क्योंकि आपके अन्दर ताकत की नहीं बल्कि इच्छा-शक्ति की कमी है। ऐसा लगता है आप जानते हैं कि लोग आपसे क्या चाहते हैं- लेकिन आज अपने खर्चों को बहुत ज्यादा बढ़ाने से बचें। पारिवारिक परेशानियों को हल करने में आपका बच्चों जैसा मासूम बर्ताव अहम किरदार अदा करेगा। आपका प्रिय आज रोमांटिक मूड में होगा। किसी लघु या मध्यावधि पाठ्यक्रम में दाखिला लेकर अपनी तकनीकी क्षमताओं में निखार लाएँ। अपने काम से आराम लेकर आज आप कुछ समय अपने जीवनसाथी के साथ बिता सकते हैं।

मकरः भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी ।

मकरः शारीरिक बीमारी के सही होनी की काफी संभावनाएँ हैं और इसके चलते आप शीघ्र ही खेल-कूद में हिस्सा ले सकते हैं। आपका पैसा तभी आपके काम आएगा जब आप उसको संचित करेंगे यह बात भली भांति जान लें नहीं तो आपको आने वाले समय में पछताना पड़ेगा। मुसीबत के वक़्त परिवार से आपको मदद और सलाह हासिल होगी। आप दूसरों के तजुर्बों से कुछ सबक सीख सकते हैं। यह आपके आत्मविश्वास की मजबूती के लिए बहुत जरूरी है। प्यार-मोहब्बत के मामले में दबाव बनाने की कोशिश न करें।

कुंभः गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा ।

कुंभः कुछ तनाव और मतभेद आपको चिड़चिड़ा और बेचैन बना सकते हैं। आर्थिक तंगी से बचने के लिए अपने तयशुदा बजट से दूर न जाएँ। परिवार के सदस्यों की जरूरतों को तरजीह दें। उनके सुख-दुःख के भागीदार बनें, ताकि उन्हें महसूस हो कि आप वाकई उनका खयाल रखते हैं। थोड़े बहुत टकराव के बावजूद भी आज आपका प्रेम जीवन अच्छा रहेगा और आप अपने संगी को खुश रखने में कामयाब होंगे। साझीदार से संवाद कायम करना बहुत कठिन सिद्ध होगा। आपका आकर्षक और चुम्बकीय व्यक्तित्व सभी के दिलों को अपनी तरफ खींचेगा।

मीनः दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची ।

मीनः हृदय-रोगियों के लिए कॉफी छोड़ने का सही समय है। अब इसका जरा भी इस्तेमाल दिल पर अतिरिक्त दबाव डालेगा। आज के दिन धन हानि होने की संभावना है इसलिए लेन-देन से जुड़े मामलों में जितना आप सतर्क रहेंगे उतना ही आपके लिए अच्छा रहेगा। आपकी परेशानी आपके लिए खासी बड़ी हो सकती है, लेकिन आस-पास के लोग आपके दर्द को नहीं समझेंगे। शायद उन्हें लगता हो कि इससे उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। दोस्ती में प्रगाढ़ता के चलते रोमांस का फूल खिल सकता है।

खेती में पोटाश की भूमिका

- पौधों की वृद्धि से संबंधित प्रक्रियाओं में पोटेशियम की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भूमिका होती है।
- साठ से अधिक उत्प्रेरकों (एन्जाइम) की क्रियाशीलता को बढ़ाता है।
- प्रकाश संश्लेषण के उत्पाद को बीज, जड़, फल तथा कन्द के निर्माण के लिये उपलब्ध कराने में सहायक है।
- प्रोटीन की संरचना में सहायक होकर नाइट्रोजन की उपयोग क्षमता को बढ़ाता है।
- पौधों में सूखा, पाला रोग तथा कीटों के विरूद्ध अवरोध क्षमता पैदा करता है।
- फसल की जल शोषण क्षमता में वृद्धि करके सिंचाई जल की आवश्यकता में कमी करने में सहायक है।
- जड़–तंत्र के स्वस्थ विकास के लिये आवश्यक है तथा मिट्टी में हवा की दशाओं को सहन करने की क्षमता उत्पन्न करता है।
- फसल उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि लाता है। इस तरह पोटाश का फसल गुणवत्ता में विशेष महत्व है।
- फलों के आकार,रंग, चमक में सुधार लाता है। इससे बाजार में उनका अधिक मूल्य मिलता है। और उपभोक्ता इन्हें अधिक पसंद करता है।
- फसलों को गिरने से बचाता है।
- गन्ना, चुकन्दर, शकरकन्द तथा अन्य जड़ वाली फसलों में शर्करा के निर्माण एवं संचालन के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।
- सरसों, मूंगफली जैसी फसलों में तेल के निर्माण में सहायक है।
- पौधों की वृद्धि तथा ओज में बढ़ोत्तरी करता है।
- कोशिका दीवार पतली, तना कमजोर, भोजन वाहक नली में कमी, की संख्या एवं विकास में कमी पत्तियों में शर्करा संचयन तथा तनों और पत्तियों में प्रयोंगित नाइट्रोजन यौगिक का संचयन।
- पुरानी पत्तियों की नोकों तथा किनारों पर विकसित नारंगी रंग के हरितिमाहीन धब्बे।
- पत्तियों में हरितिमाहीन स्थान का मृत–प्रायः होना, उत्तकों का मरना तथा पत्तियों का सूखना।
- अभाव के लक्षणों का पुरानी पत्तियों से नई पत्तियों पर फैलना और अन्ततः पौधों का मर जाना।
- अभाव ग्रस्त पौधों की जड़ों के विकास में कमी और सड़न जैसे लक्षण।
- रोगों का प्रकोप बढ़ना।
- सिकुड़े दाने व कम उपज।
- फलों, सब्जियों और रेशे वाली फसलों की गुणवत्ता में कमी।

फसलें पोटेशियम का उपयोग काफी अधिक मात्रा में करती हैं। अधिकांश फसलें पोटेशियम का निष्कासन नाइट्रोजन से अधिक करती हैं। मृदा उर्वरता तथा उत्पादकता के दीर्घकालीन टिकाऊपन के लिये पौधों द्वारा निष्कासित पोटाश की पूर्ति करने के लिये पोटाश उर्वरक का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है। प्रयोग करने के लिये पोटाश की संस्तुति निम्न है।

मिट्टी परीक्षण आधारित सिफारिशें

पोटाश की यह सिफारिश उस खेत के लिये उपयुक्त होती है, जिस खेत की मिट्टी की जांच की गई होती है। भूमि परीक्षण के आधार पर सिफारिश पोटाश की मात्रा, सामान्य या तदर्थ संस्तुति की अपेक्षा अधिक संतुलित तथा लाभकारी होती है। अधिकांश परिस्थितियों में प्रचलित उर्वरक सिफारिशें अधिकतम लाभकारी उपज के लिये अपर्याप्त सिद्ध हो रही हैं। देश के विभिन्न भागों में किये गये दीर्घकालीन परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि वर्तमान में नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश की ड्योढी मात्रा देने से उपज में सार्थक वृद्धि होती है। प्रगतिशील किसान जो कि उच्चतम आर्थिक उपज प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिये स्थान विशेष के अनुसार उर्वरकों की मात्रा की सिफारिश की जानी चाहिए। फसलों में पोटाश का प्रयोग खेत की तैयारी के समय बुवाई/रोपाई के ठीक पहले करके मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें हल्की मिट्टी में उगाई जाने वाली कम अवधि की फसलों में पोटाश तत्व की हानि को रोकने के लिये बुवाई के तीन-चार सप्ताह बाद पोटाश तत्व की हानि को रोकने के लिये बुवाई के तीन-चार सप्ताह बाद पोटाश की खड़ी फसल में आंशिक प्रयोग लाभकारी रहता है। पोटाश के प्रयोग का निर्धारित फसल की वृद्धि की अवस्था, वर्षा, मिट्टी का गठन, मौसम और प्रयोग विधि पर निर्भर करता है।

अधिक उपज एवं उत्तम गुणवत्ता के लिये पोटाश के प्रयोग की महत्ता एवं आवश्यकता पहले की तुलना में अब ओर अधिक है। अतः अन्य पोषक तत्वों की संस्तुति मात्रा के लिये पोटाश की निर्धारित मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ ही वर्तमान में पोटाश उर्वरक की सिफारिशें में सुधार की आवश्यकता है। मिट्टी में पोटाश की उपलब्ध मात्रा तथा पोटाश उर्वरक की मात्रा निर्धारित की जाना चाहिए। औसत उपज प्राप्त करने वाले किसानों की तुलना में अधिक उपज प्राप्त करने वाले प्रगतिशील किसानों के लिये पोटाश उर्वरक की सिफारिश अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होनी चाहिए।

सामान्य सिफारिशें

मिट्टी जांच के अभाव में कृषि संस्थानों द्वारा निर्धारित उर्वरक संबंधी तदर्थ संस्तुतियां प्रत्येक फसल के लिये उपलब्ध है। जिस आधार पर किसान पोटाश उर्वरक का निर्धारण कर सकते हैं। ये संस्तुतियां वास्तव में मध्यम उत्पादन के लिये उपयोगी होती है, जिन्होंने अपने खेत की मिट्टी के स्तर की जांच नहीं करायी है।

कम वर्षा वाले क्षेत्रों में लगाएं ग्वार

जलवायु एवं मिट्टी- यह फसल शुष्क से आर्द्र तक की सभी प्रकार की जलवायु में आसानी से की जा सकती है। ग्वार की फसल अच्छे जल निकास वाली रेतीली, दोमट, व बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। खरीफ में जहां 250 से 450 मिली मीटर वर्षा होती है। फसल अच्छी तरह पनपती है।

बीजोपचार

अंगमारी रोग की रोकथाम के लिए बुवाई के पूर्व प्रति किलो बीज को 100 मिलीलीटर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के घोल में 5 घंटे भिगोकर रखें इसके बाद राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बीज को बोयें।

उन्नत किस्में

दुर्गा बहार, दुर्गापुर सफेद, आरजीसी 471, आरजीसी 197, एफएस 277, आरजीसी 1004।

बीज की मात्रा व समय

प्रति हेक्टर 15 से 20 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है परन्तु यदि चारे के लिए बोई जाने वाली ग्वार का बीज प्रति हेक्टर 30 से 40 किलोग्राम बोना चाहिये। घना बोने पर शाखायें फेल नहीं पायेंगी जिससे फली कम लगेंगी।उर्वरक की मात्रा व विधि- प्रति हेक्टर 130 किलोग्राम यूरिया, 150 किलोग्राम स्फुर एवं 50 किलोग्राम पोटाश तत्व को आधार खाद के रूप में बुवाई के समय बीज के 3-4 सेंटीमीटर नीचे ओर कर दें। जहां जिन्क की कमी वाले क्षेत्र में अधिक उपज के लिए 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर प्रति तीन वर्ष में दें।

निराई-गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण

ग्वार की पैदावार को खरपतवार 50 से 60 प्रतिशत तक घटा देते हैं। इसके लिये खेत में प्रथम निराई-गुड़ाई बुवाई के 30 दिन बाद कर दें जिससे फसल की बढ़वार अच्छी होगी तथा नमी भी संरक्षित होगी और यदि अधिक खरपतवारों की समस्या हो तो बुवाई के तुरन्त बाद पौधे जमीन से ऊपर निकलने से पहले 500 से 750 ग्राम पेन्डीमिथालीन दवा अच्छी तरह छिड़काव करें।

लघुधान्य फसलों की उत्पादन तकनीक

भूमि की तैयारी

ये फसलें प्रायः हर प्रकार की भूमि में पैदा की जा सकती हैं। जहां कोई अन्य धान्य फसल उगाना संभव नहीं होता, वहां भी ये फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं। उतार–चढ़ाव वाली, कम जलधारण क्षमता वाली, उथली सतह वाली आदि कमजोर किस्म की भूमि में यह फसलें अधिकतर उगाई जा रही हैं। हल्की भूमि में, जिसमें पानी का निकास अच्छा हो, इनकी खेती के लिए उपयुक्त होती हैं।

बीज का चुनाव एवं मात्रा

भूमि की किस्म के अनुसार उन्नत किस्म के बीज का चुनाव करें। हल्की पथरीली व कम उपजाऊ भूमि में जल्दी पकने वाली जातियों का तथा मध्यम गहरी व दोमट भूमि में एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में देर से पकने वाली जातियों की बोनी करें। लघु धान्य फसलों की कतारों में बुवाई के लिए 8–10 किलोग्राम बीज तथा छिटकवां बोनी के लिए 12–15 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बोने का समय, बीजोपचार एवं बोने का तरीका

वर्षा आरंभ होने के तुरंत बाद लघु धान्य फसलों की बोनी कर दें। शीघ्र बोनी करने से उपज अच्छी प्राप्त होती है। कोदों में सूखी बोनी मानसूनी वर्षा आने के दस दिन पूर्व करने पर उपज में अन्य विधियों से अधिक उपज प्राप्त होती है। बोनी के पूर्व बीज को मेंकोजेब या थायरम दवा 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार करें। ऐसा करने से बीज जनित रोगों एवं कुछ हद तक मिट्टी जनित रोगों से फसल की सुरक्षा होती है। कतारों में बोनी करने पर कतार से कतार की दूरी 20–25 सेमी तथा पौधों से पौधों की दूरी 7 सेमी उपयुक्त पाई गई है। इसकी बोनी 2–3 सेमी गहराई पर करें। प्रयोगों द्वारा पाया गया है कि कोदों में 6–8 लाख एवं कुटकी में 8–9 लाख पौधे प्रति हेक्टेयर अधिकाधिक उत्पादन वृद्धि हेतु आवश्यक होता है।

खाद एवं उर्वरक का उपयोग

प्रायः किसान इन लघु धान्य फसलों में उर्वरक का उपयोग नहीं करते हैं। किन्तु कुटकी, कंगनी, सांवा के लिए 40 किलो यूरिया, 125 किलो स्फुर/ हेक्टेयर तथा कोदो एवं रागी के लिए 87 किलो यूरिया व 125 किलो स्फुर प्रति हेक्टेयर का उपयोग करने से उपज में वृद्धि होती है। उपरोक्त नत्रजन की आधी मात्रा व स्फुर की पूरी मात्रा बुवाई के समय एवं नत्रजन की शेष आधी मात्रा बुवाई के तीन से पांच सप्ताह के अंदर निंदाई के बाद दें।

निंदाई गुड़ाई

बुवाई के 20–30 दिन के अंदर एक बार हाथ से निंदाई करें तथा जहां पौधे न उगे हो वहां पर अधिक घने उगे पौधों को उखाड़कर रोपाई करके पौधों की संख्या उपयुक्त करें। यह कार्य 20–25 दिनों के अंदर कर ही लें। यह कार्य पानी गिरते समय सर्वोत्तम होता है।

उन्नत जातियां

(अ) **कोदों** – जवाहर कोदों 48 (डिण्डौरी–48), जवाहर कोदों – 439, जवाहर कोदों – 41, जवाहर कोदों – 62, जवाहर कोदों – 76, जीपीयूके – 3

(ब) **कुटकी** – जवाहर कुटकी – 1(डिण्डौरी–1), जवाहर कुटकी–8, सीओ– 2, पीआरसी – 3

(स) **रागी** – एचआर–374, आरएयू–8, जेएनआर–2, जेएनआर–852, जेएनआर–1008

(द) **कंगनी** – अर्जुना, – एसआईए–326

(ई) **सांवा** – व्हीएल–29, के–1

(फ) **चीना** – जीपीयू–17, के–1

फसल की कटाई-गहाई एवं भण्डारण

फसल पकने पर कोदों व कुटकी को जमीन की सतह के ऊपर कटाई करें। खलिहान में रखकर सुखाकर बैलों से गहाई करें। उड़ावनी करके दाना अलग करें। रागी सांवा एवं कंगनी को खलिहान में सुखाकर तथा इसके बाद लकड़ी से पीटकर अथवा पैरों से गहाई करें। दानों को धूप में सुखाकर भण्डारण करें।

सेनेटरी नेपकिन और गर्म पोषाहार वितरण में घपला, हिंडौन की सीडीपीओ निलंबित

♦भारत टाइम्स♦

दीनदयाल सारस्वत हिंडौन सिटी। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों पर गर्म पोषाहार और सेनेटरी नैपकिन वितरण में हुए घपले में कार्रवाई करते हुए राज्य सरकार ने हिंडौन की महिला एवं बाल विकास अधिकारी (सीडीपीओ) सुशीला जाटव को तुरंत प्रभाव से निलंबित कर दिया है। गौरतलब है कि महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों पर गर्म पोषाहार वितरित किया जाता है। इसी प्रकार साल मे चार बार सेनेटरी नैपकिन आंगनवाड़ी केदो पर सप्लाई किए जाते हैं। गर्म पोषाहार के बिलों का महिला पर्यवेक्षक के फर्जी हस्ताक्षरों से भुगतान कर दिए जाने का मामला भी सामने आया था, जिसमें महिला पर्यवेक्षक शशिबाला ने हिंडौन के नई मंडी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसके साथ सेनेटरी नैपकिन वितरण में किए गए घपले की जांच के लिए नगर परिषद के प्रतिपक्ष नेता दिनेश चंद सैनी ने राज्य सरकार को शिकायत की थी। हिंडौन के महिला एवं बाल विकास विभाग में चल रहे इन घपलों की शिकायतों पर कार्रवाई करते हुए उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने जांच के निर्देश दिए थे, जिस पर समेकित बाल विकास सेवाएं राजस्थान के निदेशक ओपी बनाकर के निर्देश पर पिछले दिनों निदेशालय के संयुक्त परियोजना निदेशक आरपी सैनी और लेखाधिकारी रजनीकांत मीणा ने हिंडौन आकर विस्तार से जांच की। इस जांच के बाद सोमवार को महिला एवं बाल विकास अधिकारी सुशीला जाटव को समेकित बाल विकास सेवाएं के निदेशक डॉ. मोहन लाल यादव ने एक आदेश जारी कर निलंबित कर दिया है। आदेशों में कहा गया है कि सीडीपीओ सुशीला जाटव के खिलाफ सेनेटरी नैपकिन का नियमानुसार भौतिक सत्यापन कराए बिना की औषधि पोर्टल पर रिवर्स एंट्री करवाई जाने के संदर्भ में गंभीर लापरवाही सामने आई है, जिस पर अनुशासनात्मक कार्रवाई विचाराधीन है। ऐसे में राजस्थान सिविल सेवा नियम 1958 के नियम 13 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए सीडीपीओ सुशीला जाटव को तुरंत प्रभाव से निलंबित किया जाता है। सुशीला जाटव को निलंबन काल में सीकर के उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग कार्यालय में उपस्थिति देने के लिए कहा गया है।

भारत टाइम्स
खबर का असर

चित्तौड़गढ़, महुवा — www.bharattimenews.com — भारत टाइम्स — दिल्ली, सोमवार 24 जून 2024 — 3

आंगनबाड़ी केन्द्रों में पोषाहार और सेनेटरी नैपकिन घोटाले पर जांच तेज

हिण्डौन के महिला एवं बाल विकास विभाग में फर्जीवाड़ा, महिला पर्यवेक्षक के फर्जी हस्ताक्षरों से कर दिया लाखों का भुगतान

भारत टाइम्स की खबर का असर

हिंडौन के महिला एवं बाल विकास विभाग में जांच शुरू

बारिश आ गई

संग तेरे पहली बारिश आ गई,
जिस पल के सुने थे किस्से,

अब रु बा रु मुलाकात आ गई।
बारिश की थी प्यास

सावन की फुहार आ गई।
झुकी नजरे,

आसमान से गिरता पानी
हाथों में ले कर हाथ

बीच सड़क पर भीगने की याद आ गई।

प्रतिभा जैन

उज्जैन मध्य प्रदेश

बधाई रचना– हिंडौन की बिटिया को मिला गोल्ड मेडल

♦भारत टाइम्स♦

हिंडौन सिटी। पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने हिंडौन की बिटिया रचना सैन को गोल्ड मेडल प्रदान कर सम्मानित किया है। यह गोल्ड मेडल राज्यपाल कलराज मिश्र ने अपने हाथों से प्रदान किया है। इस उपलब्धि पर हिंडौन निवासी लोगों ने खुशी व्यक्त करते हुए बिटिया रचना सैन को बधाई दी है। हरदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर सुधि राजीव ने बताया कि विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के 94 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गई, जिनमें प्रथम स्थान करने वाले 6 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। इनमें हिंडौन की बिटिया रचना सैन सहित प्रदेश की पांच बेटियां हैं। जयपुर की जेएलएन मार्ग स्थित आरए पोद्दार इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट के सभागार में आयोजित भव्य समारोह में राज्यपाल और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कलराज मिश्र ने हिंडौन की बिटिया रचना सैन को मीडिया स्टडीज में उपाधि प्राप्त करने पर गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया तो पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा।

कलेक्टर श्री गुप्ता की अध्यक्षता में समय-सीमा संबंधी बैठक आयोजित

♦भारत टाइम्स♦

देवास/ जगदीश परमार। क्षिप्रा शुद्धिकरण के लिए 104 ग्रामों में मुहिम चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही एक सप्ताह में करें झ कलेक्टर श्री गुप्ता ₹एक पेड़ मां के नाम₹ अभियान में 06 जुलाई को जिले के नागरिक अधिक से अधिक पौधे लगाये जिले के नागरिकों को रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने के लिए करें प्रेरित एएसपी श्री भदौरिया ने एक जुलाई से प्रभावशील हुए तीन नये कानूनों की दी जानकारी कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता की अध्यक्षता में समय-सीमा संबंधी लंबित पत्रों के निराकरण की प्रगति तथा अंतरविभागीय समन्वय से संबंधित मामलों की समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में सीईओ जिला पंचायत श्री हिमांशु प्रजापति, एएसपी श्री जयवीर सिंह भदौरिया, एसडीएम टोंकखुर्द श्री कन्हैयालाल तिलवारी, डिप्टी कलेक्टर श्री अभिषेक शर्मा, डिप्टी कलेक्टर श्री संजीव सक्सेना सहित अन्य विभागों के जिला अधिकारीगण उपस्थित थे। समय-सीमा बैठक में विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी वर्चुअल शामिल हुए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि जिले में 06 जुलाई को ₹एक पेड़ मां के नाम₹ अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान अधिक से अधिक पौधे लगाये जायेंगे। जिले के सभी नागरिकों को इस अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित करें। जिले के नागरिक अपने परिजन के साथ पौधा रोपण करें। जिले में नागरिक सीड बाल के माध्यम से पौधा रोपण करें और अन्य नागरिकों को भी प्रेरित करें। सभी विभाग अपने कार्यालयों के परिसरों में पौधारोपण करें। कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने कहा कि नालों का गंदा पानी क्षिप्रा में नहीं मिले इसलिए स्टॉप डेम बनाये। 104 ग्रामों में मुहिम चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही एक सप्ताह में करें। अतिक्रमण हटाकर नालों के दोनों और 50-50 मीटर तक पौधा रोपण कार्य करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि नगर परिषदों और ग्राम पंचायतों में मियावाकी पद्धिती से पौधा रोपण करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि ग्राम पंचायतों में कम से कम दो जगह मियावाकी पद्धिती से पौधा रोपण एवं नगर परिषदों में कम से कम 20 जगह मियावाकी पद्धिती से पौधा रोपण करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि पौधरोपण तो करें ही साथ ही पौधारोपण के पश्चात उनका रखरखाव भी करें, जिससे आने वाले समय में पार्क एवं घना जंगल के रूप में विकसित हो जाएं। मियावाकी पद्धिती से पौधा रोपण के संबंध में श्री भास्कर शुक्ला ने बैठक में प्रजेंटेशन के माध्यम से जानकारी दी। कलेक्टर श्री गुप्ता ने नगरीय क्षेत्रों में निवासरत को नागरिकों को रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिये। शासकीय कार्यालयों में रूफ रेन हॉर्वेस्टिंग सिस्टम लगाने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी अनुविभागीय अधिकारियों एवं पीएचई विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे छात्रावासों को नियमित निरीक्षण करें तथा बोरिंग के पानी की जांच कर लें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने सभी तहसीलदारों को सहकारिता की बैंक की वसूली के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री गुप्ता ने जिले में एनआरसी में भर्ती बच्चों की जानकारी ली। कोटपा अधिनियम के तहत सार्वजनिक स्थानों पर धुम्रपान करने वाले नागरिकों पर कार्यवाही के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री गुप्ता ने नल जल योजना की समीक्षा कर निर्देश दिये कि जिस ग्राम में नल जल योजना पूर्ण हो गई है, वहां योजना को हैंडओवर करने की कार्यवाही करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने पीएम सूर्य घर योजना, चलों निभाए अपनी जिम्मेदारी अभियान की समीक्षा की। कलेक्टर श्री गुप्ता ने टीएल प्रकरणों की समीक्षा कर निर्देश दिये कि टीएल प्रकरणों का निराकरण शीघ्र करें। ठक में एएसपी श्री जयवीर सिंह भदौरिया ने एक जुलाई से प्रभावशील हुए तीन नये कानूनों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान बताया गया कि भारतीय दंड संहिता 1860 को भारतीय न्याय संहिता विधेयक 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। दंड प्रक्रिया संहिता 1898 को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। इसी तरह भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 को भारतीय साक्ष्य विधेयक 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। बैठक के पूर्व कलेक्टर श्री गुप्ता ने भारतीय स्टेट बैंक के स्थापना दिवस पर कलेक्टर कार्यालय परिसर में पौधारोपण किया है। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री हिमांशु प्रजापित, एएसपी श्री जयवीर सिंह भदौरिया, एसबीआई रीजनल मैनेजर श्री संदीप प्रकाश, चीफ मैनेजर श्री अखिलेश विश्वकर्मा, डिप्टी मैनेजर श्री अनुकेश दुबे, श्री राजेन्द्र सक्सेना सहित अन्य संबंधित उपस्थित थे।

डॉक्टर्स डे पर अस्पताल परिसर में लगाए 11 पौधे

♦भारत टाइम्स♦

हिंडौन सिटी। डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में सोमवार को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, हिंडौन सिटी की ओर से जिला अस्पताल परिसर में 11 छायादार पौधे लगाकर पौधरोपण अभियान की शुरूआत की गई। उल्लेखनीय है कि डॉक्टर बिधान चंद्र रॉय की स्मृति में पूरे देश भर में 1 जुलाई को डॉक्टर्स डे मनाया जाता है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, हिंडौन के सचिव डॉ. आशीष कुमार शर्मा ने बताया कि डॉक्टर्स डे के अवसर पर जिला चिकित्सालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर चिकित्सकों के सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने के संदर्भ में भी विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर औषधीय महत्व के वृक्ष अर्जुन, बड़, शीशम के साथ करंज, अशोक आदि के जिला अस्पताल परिसर में पौधे लगाए गए। इस दौरान एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. नमोनारायण मीणा, उपाध्यक्ष डॉ. एसपी सोलंकी कोषाध्यक्ष डॉ. जलसिंह खटाना, पीएमओ डॉ. पुष्पेंद्र गुप्ता, बीसीएमओ डॉ. प्रवीण, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ.सुरेश गर्ग, डा.आरएल कोली, डॉ. जेपी मीणा, डॉ. रामावतार बंसल. डॉ. सुनील गुप्ता, डॉ. मनीष अग्रवाल, डॉ. पंकज, डॉ. देवेंद्र, डॉ. जयवीर बेनीवाल, डॉ.रामराज मीणा, डॉ. अवधेश सोलंकी, डॉ. बृजेश चौधरी आदि उपस्थित रहे।

कानपुर में नुकीले हथियार से स्टेशनरी व्यवसाई की हत्या, जांच में जुटी पुलिस

घटना से बिल्हौर थाना क्षेत्र के घिमऊ में दहशत ,वजह अभी तक पता नहीं

सुनील बाजपेई कानपुर। महानगर में चोरी की घटनाओं के साथही हत्याओं का भी दौर जारी है । इसी क्रम मेंस्टेशनरी कारोबारी को भीमौत के घाट उतार दिया गया बीते रविवार की रात हुई इस घटना से गांव घिमऊ में दहशत व्याप्त है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। फिलहाल घटना की वजह समाचार लिखे जाने तक पता नहीं चल पाई है। घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक बिल्हौर थाना क्षेत्र के घिमऊ गांव निवासी श्रीराम तिवारी (30) घर से ही स्टेशनरी का कारोबार करते थे। पुलिस के मुताबिक हत्या के शिकार श्री राम तिवारी के बड़े भाई गणेश तिवारी बिल्हौर तहसील में विधि से जुड़े काम और दूसरा बड़ा भाई सुखदेव एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता है। परिवार में मां सुनीता देवी, भाभी और उनका बेटा साथ में रहता है। जबकि पिता की पहले ही मौत हो चुकी है। मौके पर पहुंची पुलिस को भाई गणेश ने बताया कि देर रात में खाना खाने के बाद श्रीराम तिवारी ने कुछ देर टीवी देखी और इसके बाद लगभग साढ़े ग्यारह बजे नए घर के बाहर बरामदे में चारपाई पर लेट गया था। सुबह लगभग साढ़े पांच बजे मां उठने के बाद घर के बाहर पहुंची और बेटे को जगाने का प्रयास किया, तभी घटना देख चीख पड़ी। मां के चीखने पर सभी परिजनों सहित कई ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। मृतक का शव चारपाई पर पड़ा हुआ था। सिर पर बाईं तरफ किसी नुकीली चीज से हमला किया गया था, जिससे खून बह रहा था और चेहरा नीला पड़ा हुआ था। इसबीच सूचना पर थाना प्रभारी केशव तिवारी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। घटना की जांच पड़ताल शुरू की। पुलिस ने घटना स्थल के साक्ष्य जुटाने के लिए फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया। घटना की वजह क्या हैइसकी जानकारी अभी तक नहीं मिल पाई है। पुलिस छानबीन में झुकी है ।

डौंडी लोहारा में नवीन कानून के संबंध में जागरूक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

♦भारत टाइम्स♦

डौंडी लोहारा इस्लाम खान। देश में 01 जुलाई 2024 से लागू होरहे तीन महत्वपूर्ण कानून के जागरूकता के संबंध में पुलिस थाना डौंडी लोहारा मे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ने 01 जुलाई 2024 से लागू हो रहे तीन महत्वपूर्ण कानून भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023, भारतीय न्याय संहिता 2023 एंव भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 के सम्बंध में उप पुलिस अधीक्षक बालोद सुश्री नवनीत कौर थाना प्रभारी श्री लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल डौंडी लोहार व थाना लोहार स्टाफ द्वारा नवीन कानून की जानकारी व जागरूकता कार्यक्रम थाना डौंडी लोहार परिसर व नगर पंचायत भवन में जन प्रति निधि सरपंच कोटवार को दी जानकारीविस्तृत जानकारी उपस्थित जनों को दी। उन्होंने कहा कि पहले के कानून केवल आरोपी को केंद्र में रखकर बनाया गया था। लेकिन वर्तमान कानून आरोपी एंव पीड़ित दोनों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। उन्होंने कहा कि नए कानून आरोपी एंव पीड़ित के प्रति समान भाव रखता है। सभी वर्गों के लोगों को तीनों नए कानूनों के संबंध में समुचित जानकारी रखना आवश्यक है।

जिला कलक्टर ने किया बरसाती नालों का निरीक्षण

जल निकासी की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए नगर परिषद आयुक्त को दिये निर्देश

♦भारत टाइम्स♦

यादराम वर्मा गंगापुर सिटी। जिला कलक्टर डॉ. गौरव सैनी ने वर्षा के मौसम को देखते हुए सोमवार को उदेई मोड़, रिको क्षेत्र, सालोदा मोड व अन्य स्थानों पर बरसाती नालों का औचक निरीक्षण कियो इस दौरान उन्होंने अवरुद्ध नालों की साफ-सफाई, अतिक्रमण, मलबा हटाने आदि से संबन्धित कार्यों को जमीनी स्तर पर जांचो जिला कलक्टर ने बताया कि निरीक्षण का उद्देश्य अवरुद्ध नालों की साफ सफाई सुनिश्चित कर बारिश के मौसम में आमजन को जलभराव की स्थिति से शीघ्र निजात दिलाना है इस दौरान उन्होंने तत्परता से एक अवरूद्ध नाले को सुचारू रूप से चालू करवायो साथ ही लोगों द्वारा किए गए अतिक्रमण को भी उक्त स्थान से हटवायो वहीं शहर के सभी नालों की सफाई और मलबा हटाने के कार्य को प्राथमिकता से पूरा करने के निर्देश नगर परिषद आयुक्त रिंकल गुप्ता एवं सहायक अभियंता तरुण कुमार जैन को दिये इस दौरान उन्होंने निचले इलाके में जहां जलभराव की अधिक सम्भावना रहती है को चिन्हित कर नियमित रूप से साफ सफाई एवं जल निकासी की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए संबन्धित अधिकारियों को कहा जिससे आमजन को जलभराव की स्थिति का सामना न करना पड़े इस दौरान जिला कलक्टर ने आमजन से बात कर अपील की कि वे भी सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचें, अन्य प्लास्टिक या बरसाती नालों को अवरुद्ध करने वाले ठोस कचरे एवं मलबा आदि को इन नालों में नहीं डालें, सावधानी रखें एवं नगर परिषद अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सहयोग करें जिससे जलभराव की स्थिति से बचा जा सके।

खनन माफिया के राज में नतमस्तक हैं अधिकारी, अवैध धंधा जोरों पर

हनुमानगढ़ (मदनलाल पण्डितांवाली)। हनुमानगढ़ जिले में खनन माफिया का राज है। मिट्टी के अवैध खनन का बहुत बड़े पैमाने पर अवैध धंधा चल रहा है। पीलीबंगा से रावतसर सड़क पर घग्गर नदी के पुल के पास यह पूरा अवैध खनन का काम दिन-रात पुलिस, प्रशासन व खनन विभाग की सरपरस्ती में हो रहा है। जिम्मेदार आंखें बंद किए हुए हैं। सूत्रों ने पड़ताल की तो पूरे खेल का पदार्फाश हो गया। खनन माफिया के तमाम गुर्गे इन जगहों पर मौजूद रहते हैं। जब इनको कोई भनक लगी, तो ये सतर्क हो गए। फोटो व वीडियो बनाते वक्त एक गुर्गे ने आपत्ति जताई। कुछ देर काम रुका, फिर दोबारा शुरू हो गया। इस बीच, गुप्त कैमरे से अवैध कारोबार की एक-एक तस्वीर कैद की गई। एक तरफ तो जिला कलेक्टर एवं राजस्व विभाग के अधिकारी कह रहे हैं कि हम इन पर ठोस कार्रवाई करेंगे लेकिन यह बातें सब हवा-हवाई ही साबित हो रही हैं। प्रशासन की छत्रछाया में मिट्टी का अवैध खनन दिन की बजाय अब रात में ज्यादा हो रहा है यहां से मिट्टी का खनन का ट्रक यानी डंपरों में भरकर अवैध तरीके से ईंट भट्टों पर पहुंचाई जा रही है इनके आगे पीछे राजनीतिक व खनन माफियाओं की गाड़ियां सरपट दौड़ती नजर आती है और वह गाड़ियां अवैध खनन की गई मिट्टी को ईंट भट्टों तक पहुंचाने का काम करती है यह खेल कई दिनों से लगातार शुरू है जो की रावतसर सड़क पर सरेआम देखा जा सकता है अब सबसे बड़ा सवाल तो पीलीबंगा पुलिस प्रशासन पर लागू होता है की इतनी ओवरलोड होकर सड़क पर अवैध मिट्टी खनन कर ट्रक दौड़ रहे हैं और पुलिस के अधिकारी यह सब अपनी आंखों से देख रहे हैं। सूत्रों के द्वारा बताया गया कि जिन पुलिस थानों के आगे से अवैध मिट्टी खनन किए हुए ट्रक यानी कि डंपर दौड़ रहे हैं वहां की भी तस्वीर और वीडियो कमरे में कैद हुए हैं सूत्रों ने बताया कि इससे अंदेशा यही लगाया जा सकता है कि पुलिस प्रशासन की मिलीभगत इन अवैध खनन माफिया के साथ जरूर बनी हुई है। अगर पुलिस प्रशासन की खनन माफिया के साथ कोई मिलीभक्त नहीं है तो इनको कार्रवाई करने में क्या परहेज है।

पुलिस प्रशिक्षण शाला उज्जैन में नए विधिक कानून के संबंध में जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

♦भारत टाइम्स♦

उज्जैन /जगदीश परमार। कार्यक्रम का शुभारंभ पुलिस अधीक्षक सुश्री अंजना तिवारी के द्वारा किया गया ,उनके द्वारा बताया गया कि 1 जुलाई 2024 से भारतीय दंड संहिता के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता के स्थान पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम के स्थान पर भारतीय साक्ष्य संहिता 2023 लागू हो गए हैं। नए विधिक कानून का उद्देश्य आम जनता को सरल एवं सुलभ न्याय पहुंचना है। इसमें कई धाराओं को हटा दिया गया है तथा कई नवीन धाराओं को समावेश किया गया है। कारावास की अवधि में बढ़ोतरी की गई है, सामुदायिक सेवा जैसे दंड का प्रावधान भी इसमें किया गया है। इकाई में पदस्थ एडीपीओ श्री प्रहलाद घटिया के द्वारा बताया गया कि नए विधिक कानून के अंतर्गत पुलिस को किसी भी माध्यम से आपके साथ घटित घटना के संबंध में प्रथम सूचना प्रतिवेदन दर्ज कर सकते हैं तथा भारत के किसी भी थाना क्षेत्र में प्रथम सूचना प्रतिवेदन शून्य पर दर्ज कर सकते हैं। मामले की प्रगति से आपको अवगत कराया जाएगा। एडीपीओ श्री मुकेश कुमार पांडे के द्वारा बताया गया कि नवीन विधिक कानून में महिलाओं एवं बच्चों से संबंधित अपराधों को एक ही जगह संकलित किया गया एवं अधिकतम दंड का प्रावधान भी किया गया है। न्यायिक प्रक्रिया को सरल बनाते हुए निर्धारित समय में ट्रायल पूरा कर फैसले की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित की गई है। जप्ती एवं तलाशी में मोबाइल अथवा डिजिटल माध्यम से रिकॉर्डिंग की अनिवार्यता को बताया गया है। जन जागरूकता अभियान में सेवानिवृत पुलिस अधिकारी ग्राम एवं नगर रक्षा समिति पवांसा ,स्वयंसेवी, ग्राम जयवंतपुर पाटपाला के वरिष्ठ नागरिक ,चैतन्य वॉइस संस्था की स्वयं सेविका ,जय अमला विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाएं एवं छात्र-छात्राएं ग्राम जयवंतपुर की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं कोटवार उपस्थित रहे जिनके द्वारा नई विधि कानून के संबंध में अनेक प्रश्न पूछे गए जिनका निराकरण पुलिस अधीक्षक एवं सहायक लोक अभियोजन अधिकारियों के द्वारा किया गया ।कार्यक्रम में मध्य प्रदेश पुलिस के द्वारा तैयार की गई फिल्म अब ना बचोगे बच्चू का प्रदर्शन भी किया गया। अतिथियों का प्रदर्शन आभार प्रदर्शन रक्षित निरीक्षक शशि वर्मा के द्वारा किया गया।

देश में नई लागू भारतीय न्याय संहिता
नागरिक सुरक्षा संहिता अधिनियम की लोगों को दी गई जानकारी

♦भारत टाइम्स♦

रामनगर। स्थानीय थाना परिसर में क्षेत्र के नागरिकों को केंद्र सरकार द्वारा देश में एक जुलाई सोमवार से तीन नए कानून लागू किया गया है उससे सम्बन्धित लोगो को जानकारी दिया और लोगो को पंपलेट बांटकर जागरुक किया गया।इस अवसर पर थाना प्रभारी निरीक्षक जगदीश कुशवाहा, चौकी प्रभारी निरीक्षक घनश्याम मिश्र ने लोगो को भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, और भारतीय साक्ष्य अधिनियम की विस्तृत रूप से जानकारी कराई।उन्होंने कहा कि ये नए कानून आईपीसी, सीआरपीसी और एविडेंस एक्ट की जगह ले रहे हैं, जो अंग्रेजों के जमाने के थे और जिनका मुख्य मकसद लोगों को सजा देना था। अंग्रेजों के जमाने के कानूनों का मुख्य उद्देश्य शासन और नियंत्रण था। उन कानूनों को इस तरह से बनाया गया था कि वे औपनिवेशिक शासन के हितों की रक्षा कर सकें और भारतीय जनता पर कड़ा नियंत्रण रख सकें।

एक पेड़ मां के नाम अभियान के द्वारा पौधारोपण किया गया

अलवर/ राजेश गुप्ता। पौधारोपण के अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व शीर्ष नेतृत्व के आह्वान पर प्रत्येक बूथ पर यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है मन की बात कार्यक्रम में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस कार्यक्रम का उल्लेख किया है इसके द्वारा जहां एक और हम जननी मां के प्रति कृतज्ञता जाहिर करेंगे वहीं दूसरी ओर प्रकृति मां के प्रति कर्तव्य का बोध भी करेंगे इस अवसर पर जिला कोषाध्यक्ष प्रदीप जैन,शक्ति केंद्र संयोजक संदीप गुप्ता, जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता, मंडल अध्यक्ष मनोज चौहान, पूर्व मंडल अध्यक्ष राजेंद्र सिंह शेखावत, के के मदान, मंडल उपाध्यक्ष महेंद्र यादव, आशीष अरोड़ा, मंडल मंत्री दीपक शर्मा, बूथ अध्यक्ष किरण कुमार, रामकुमार कोली, यह जानकारी जिला मिडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता ने दी।

नर्सिंग भर्ती घोटाला एवं पेपर लीक मामले को लेकर कांग्रेस का धरना प्रदर्शन

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी। झाबुआ। भाजपा सरकार की देखरेख में शिक्षा माफिया द्वारा प्रदेश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने पर कांग्रेस पार्टी के नेता गण कलेक्टर कार्यालय के गेट पर धरने पर बैठ कर मुख्यमंत्री मोहन यादव शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान तत्कालीन चिकित्सा मंत्री विश्वास सारंग के इस्तीफे की मांग के नारे लगा रहे थे छात्र-छात्राएं जो धरना प्रदर्शन में शामिल हुए हाथों में तख्तियां लिए जिसमें छात्रों के सम्मान में कांग्रेस मैदान में पेपर लीक मामले के दोषियों पर कार्यवाही की मांग को लेकर नारेबाजी करते रहे तत्पश्चात महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया ज्ञापन का वाचन प्रदेश प्रवक्ता साबिर फिटवेल द्वारा कर अपर कलेक्टर एस एम मुजाल्दा को समस्त कांग्रेस नेताओं द्वारा ज्ञापन सौंपा गया ज्ञापन में भाजपा सरकार देश प्रदेश के प्रतिभाशाली युवाओं युवतियों के साथ खुलेआम खिलवाड़ कर रही है।

योगेश भान शर्मा बने पत्रकार एसोसिएशन के अध्यक्ष

♦भारत टाइम्स♦

रामनगर/ वाराणसी। वरिष्ठ पत्रकार योगेश भान शर्मा रामनगर पत्रकार एसोसिएशन के अध्यक्ष चुन लिए गए हैं। एसोसिएशन की सोमवार की शाम हुई बैठक में सर्वसम्मति से उनको अध्यक्ष चुना गया। उनका कार्यकाल दो वर्षों का होगा। इसके अलावा विजयानन्द,रमेश कुमार सैय्यद नैयर और डॉ आर के सिंह उपाध्यक्ष , जसवंत सिंह महामंत्री पद की जिम्मेदारी निभाएंगे। जब कि कोष का मामला संजय यादव के अधीन रहेगा। संजय पाण्डेय, वली अहमद और मनोज श्रीवास्तव को संयुक्त मंत्री पद का दायित्व सौंपा गया है। संजय यादव को मीडिया प्रभारी मनोनीत किया गया है।

अध्यात्म का आधारभूत सिद्धांत है
आत्मा और शरीर की भिन्नता : युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

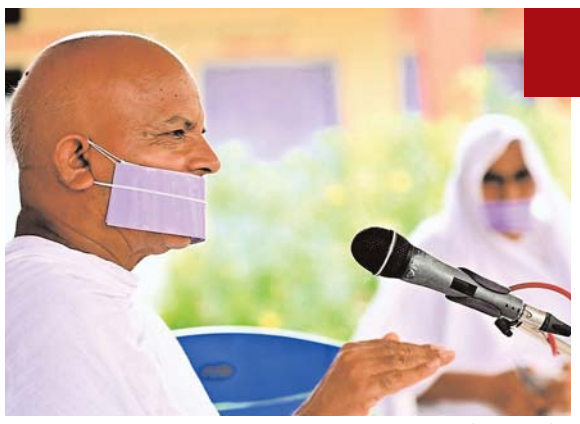

♦भारत टाइम्स♦

सामोडे, धुळे (महाराष्ट्र)। दो प्रकार की विचारधाराएं बताई गई हैं- तत जीव, तत शरीर और दूसरी अन्य जीव अन्य शरीर विचारधारा। तत जीव, तत शरीर विचारधारा नास्तिक विचारधारा है। जहां शरीर और आत्मा को अलग-अलग नहीं माना गया है। आत्मा और शरीर के भिन्नता की विचारधारा आस्तिकवाद की विचारधारा है। अध्यात्म का जगत इस बात पर टिका हुआ है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है। आत्मा शाश्वत, अविनाशी और अमर है, शरीर नश्वर है। इसके आधार पर ही अध्यात्मवाद टिका हुआ है। इसी के आधार पर अध्यात्म की साधना भी होती है। दिखाई देने वाले इस शरीर के भीतर भी दो शरीर और बताए गए हैं- तैजस शरीर और कार्मण शरीर। तैजस शरीर सूक्ष्म बताया गया है और कार्मण शरीर सूक्ष्मतर होता है। कार्मण शरीर कारण शरीर है। आदमी के सुख-दुःख का कारण कार्मण शरीर होता है। बहुत कुछ इस कार्मण शरीर से ही होता है। इस जीव को चलाने वाला भी कार्मण

शरीर होता है। किस जीव का जन्म कहां आदि सारा अधिकार कार्मण शरीर के पास होता है। दिखाई देने वाला यह शरीर स्थूल शरीर है। मनुष्य के इस औदारिक शरीर से उदारता रहती है। इस शरीर के द्वारा ही जीव साधना करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। किसी के भी मोक्ष जाने के लिए मनुष्य का जन्म और औदारिक शरीर को छोड़ने के बाद ही प्राप्त हो सकता है। मनुष्य जन्म से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। आत्मा और शरीर अलग-अलग है, यह अध्यात्म का आधारभूत सिद्धांत है। आदमी यह सोचे कि आत्मा शाश्वत है, उसके लिए क्या किया जा रहा है और अशाश्वत शरीर के लिए कितना किया जा रहा है? आदमी को अपनी आत्मा के कल्याण के लिए, हित के लिए आदमी को धर्मोपासना करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को धर्म का संग्रह करने का प्रयास करना चाहिए, जो आत्मा के लिए कल्याणकारी बन सकता है। आदमी अपने जीवन में धर्म की साधना करे। गृहस्थ भी अपने जीवन में धर्म की साधना करे। कभी इस गृहस्थ शरीर से भी मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। उक्त पावन प्रेरणा जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सामोडे में स्थित कन्या विद्यालय परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन में उपस्थित जनता को प्रदान कीं। लगभग बीस वर्षों के बाद अपने आराध्य को अपने आंगन पाकर और उनकी मंगलवाणी का श्रवण कर सामोडे की जनता हर्षविभोर थी। इसके पूर्व कारखाना फाटा- साक्री से युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवलसेना के साथ मंगल प्रस्थान किया। यात्रापथ में परिवर्तन के उपरान्त आचार्यश्री सामोडे की ओर पधार रहे थे।

सपाइयों ने सांसद अखिलेश यादव का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया

♦भारत टाइम्स♦

रामनगर। क्षेत्र में अलग-अलग जगहों पर समाजवादी संगठनों ने सोमवार को सपा मुखिया अखिलेश यादव का जन्मदिन सपा मुखिया अखिलेश यादव का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यकताओं ने केक काटकर एक दूसरे को खिलाया और आपस में खुशी बाँटी। इसी क्रम में रामनगर क्षेत्र में आने वाले ग्राम सभा भीटी स्थित बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति के निकट इकठ्ठा हुए सपाइयों ने अखिलेश यादव के चित्र के समक्ष केक काटकर एक दूसरे को खिलाया व खुशी बाटी। जन्मदिन को पीडीए पखवाड़ा के रूप में मनाते हुए कई संगठनों के लोग शामिल हुए।जिसमें समाजवादी पार्टी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ , समाजवादी पार्टी महिला सभा, के कार्यकताओं का संयुक्त नेत्तृत्व रहा । इसके साथ ही वृक्षा रोपण कर गरीब असहाय पीड़ित व्यक्तियों एवम बच्चों में फल एवम मिष्ठान कॉपी पेंसिल वितरण किया गया। कार्यक्रम में जितेंद्र यादव मलिक पूर्व अध्यक्ष, रामबाबू सोनकर पूर्व प्रधान भीटी, आरती यादव महानगर अध्यक्ष महीला सभा,विवेक कहार महानगर अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, मुरारी कश्यप, संजय यादव, सुजीत सिंह, मणि शंकर शर्मा,इंजामामुल खान, अरशद राईन, डा सौकत अली मान सिंह, उमेश यादव धनंजय यादव,मनीष यादव, साहित अन्य कार्यकर्ता भी शामिल रहे।वहीं वॉर्ड नंबर 65 पुराना रामनगर के सपा पार्षद रामकुमार यादव राजू ने अपने कार्यालय पे एक कार्यक्रम का अयोजन किया जिसमें उपस्थित सपा।कार्यकताओं ने भी केक काटकर सपा मुखिया का जन्मदिन मनाया,इस अवसर मिठाईया बाँटी व पौधा रोपण भी किया गया।

खट्टी मीठी यादों के सहारे साथ गुजारें 30 बरस – संतोष विभा ने विवाह वर्षगाँठ पर की तपस्वियों की सेवा वर्षीतप आराधना के 3 माह पूर्ण 400 दिन तक चलेगी आराधना

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी। झाबुआ। थांदला कुछ रिश्तें ऐसे होते है जो अनजान बंधन में बंध कर 7 जन्मों के सफर पर निकल पड़ते है। वर्तमान भौतिक मोबाइल के युग में जहाँ आपसी सम्बंध सहनशीलता के आभाव में 30 दिन भी नही टिकते वहाँ संतोष विभा आदर्श उदाहरण हो सकते है जिन्होनें 30 वर्ष एक साथ गुजारें। कुछ खट्टी कुछ मीठी यादों के इस सफर में थांदला की बहू विभा ने जहाँ श्वसुर की पिता की तरह सेवा की तो ननदों का भी पूरा विश्वास जीता। पति जब पत्नी का हर समय साथ दे तो फिर वह हर मुसीबतों को अपनाकर भी कुशलता से जीवन की गाड़ी चलाने लग जाती है। विभा व संतोष श्रीमार ने अपनी 30 वीं वर्षगाँठ वर्षीतप आराधना कर रहे तपस्वियों की सेवा कर उन्हें पारणा कराते हुए मनाया। गौर तलब है कि डुंगरांचल के इतिहास में पहली बार थांदला नगर में एक साथ सामूहिक 72 वर्षीतप आराधना हो रही है। स्वयं विभा भी वर्षितप आरधना कर रही है। वही सामूहिक वर्षीतप आराधना को आज तीन माह भी पूर्ण हो गए है। ऐसे में इस युगल दम्पत्ति ने अपनी वैवाहिक वर्षगाँठ के दिन सभी तपस्वियों को साता उपजाते हुए पारणा करवाया वही सभी तपस्वियों का तिलक लगाकर बहुमान करते हुए प्रभावना प्रदान की। उनके सामुहिक पारणें के दौरान सुपत्रदान का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। जिन शासन गौरव जैनाचार्य पूज्य श्री उमेशमुनिजी म.सा. ₹अणु₹ के शिष्य बुद्धपुत्र प्रवर्तक श्री जिनेंद्रमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सरलमना पूज्याश्री निखिशीलाजी म.सा. आदि ठाणा - 4 की पावन प्रेरणा से थांदला स्थानकवासी श्रीसंघ के सानिध्य में आयोजित सामूहिक पारणें में करीब 15 आधार स्तम्भ सदस्य मुख्य लाभर्थी है, वही संघ द्वारा प्रति पारणें में एक सहायक लाभर्थी के लाभ लेने का प्रवाधान किया गया है।

दंपत्ति को गोली मारने वाला अभियुक्त मुठभेड़ में घायल

♦भारत टाइम्स♦

प्रतापगढ़। कोतवाली मान्धाता के हैंसी परजी में पति-पत्नी पर फायरिंग करने में वांछित बच्चा यादव को 24 घंटे के अंदर पुलिस ने मुठभेड़ में दबोच लिया। अभियुक्त बच्चा यादव प्रतापगढ़ ही नहीं जनपद प्रयागराज, एवं राज्य महाराष्ट्र में एक दर्जन मुकदमें लूट, चोरी, डकैती जैसे अपराधों में संलिप्त रहा। स्वाट टीम व कोतवाली मान्धाता पुलिस की संयुक्त टीम के साथ हुई मुठभेड़ में शातिर बदमाश घायल हुआ। पुलिस मुठभेड़ में अन्तर्राज्यीय शातिर अपराधी बच्चा यादव के दोनो पैरों में गोली लगी। अभियुक्त के कब्जे से 01 पिस्टल 32 बोर, 02 जिन्दा कारतूस, 03 खोका बरामद किया गया। 29 जून को कोतवाली मान्धाता क्षेत्र के हैंसी परजी में पति-पत्नी पर फायरिंग कर घायल करने वाले अन्तर्राज्यीय शातिर अपराधी को पुलिस ने मुठभेड़ में धर दबोचा। जनपद के नवागत एसपी डा. अनिल कुमार के निर्देशन में घटना के 24 घंटे के अंदर पुलिस का कड़ा एक्शन दिखा। मुठभेड़ में अभियुक्त के दोनों पैरों में गोली लगी है। घटना में शामिल अन्य नामजद और वांछित अभियुक्तों की तलाश में पुलिस दबिश दे रही है। महज 48 घंटे पहले पुलिस अधीक्षक पद पर कार्यभार ग्रहण करने वाले पुलिस अधीक्षक डा. अनिल कुमार ने पद भार ग्रहण करने के बाद ही अपराध एवं अपराधियों के प्रति सरकार और शासन की जीरो टालरेंस की नीति स्पष्ट कर दी थी।

चिकित्सा सेवा सम्मान 2024 से सम्मानित हुए डॉ विभाष राजपूत

♦भारत टाइम्स♦

बागपत, उत्तर प्रदेश। विवेक जैन। नेशनल डाक्टर डे के अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बागपत के चिकित्सा अधीक्षक डाक्टर विभाष राजपूत को चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए चिकित्सा सेवा सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का आयोजन सामाजिक कार्यो में अपनी अहम पहचान बना चुकी संस्था सारथी वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा किया गया। सारथी वेलफेयर फाउंडेशन की संस्थापक और चेयरमैन वंदना गुप्ता ने बताया कि डाक्टरों का पेशा बहुत ही महान है। दुनियाभर में डाक्टरों को भगवान के बाद दूसरा दर्जा दिया जाता है। कहा कि नेशनल डाक्टर डे पर वह चिकित्सा क्षेत्र की महान शख्सियतों में शुमार डाक्टर विभाष राजपूत को सम्मानित करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रही है। बताया कि डाक्टर विभाष राजपूत जनपद बागपत के प्रसिद्ध चिकित्सकों में शुमार है। कहा कि कोरोनाकाल में उन्होंने स्वयं के जीवन की प्रवाह किये बिना जिस प्रकार क्षेत्र के लोगों की सेवा की उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये वह कम है। कहा कि बागपत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर मरीजों को अच्छी से अच्छी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में डाक्टर विभाष राजपूत हर संभव प्रयास करते है। बताया कि डाक्टर विभाष राजपूत को चिकित्सा क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यो के लिए अनेकों शीर्ष संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत व सम्मानित किया जा चुका है। डाक्टर विभाष राजपूत ने कहा कि वह अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करते है कि मरीजों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी ना हो और उनका अच्छा ईलाज हो सके। कहा कि यह सम्मान बागपत सामुदायिक स्वास्थय केन्द्र से जुड़े हर व्यक्ति का सम्मान है। बागपत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सभी के सामुहिक प्रयासों से आज केन्द्र अपनी अच्छी चिकित्सा सेवायें प्रदान कर रहा है।

आखिर तेज बारिश ने दिखा दी अलवर शहर की सफाई व्यवस्था

♦भारत टाइम्स♦

अलवर/ राजेश गुप्ता। शहर में सोमवार अलसुबह हुई बारिश ने आखिर शहर का हाल बता ही दिया कि जिला प्रशासन व नगर निगम अलवर ने अलवर को स्वच्छ व सुन्दर बनाने के लिए क्या किया है। तेज हवा के साथ तेज हुई बारिश से जगह जगह पानी भर गया। शहर में ऐसी कहीं भी जगह नहीं बची जहां बारिश का पानी ना भरा हो। ऐसे में हर किसी ने जिला प्रशासन व नगर निगम अलवर के अधिकारियों को जमकर कोसा। शहरवासियों ने कहा कि अभी तो बारिश की शुरुआत है आगे होने वाली तेज बारिश में शहर में क्या हाल होगा ये सब भगवान ही जाने। सोमवार को हुई बारिश से शहर का हाल ऐसा हो चला कि जहां भी पानी भरा वहां का पानी का पता नहीं चला कि यहां नाले का पानी आया है या किसी नाली का या फिर बारिश का साफ पानी है। बारिश के इस पानी भराव में जहां गन्दगी इतनी कि वहां से गुजरने वाले हर व्यक्ति का बदबू से दिमाग भी बन्द सा होने लगा गया। बस हर किसी को गन्दे पानी से दूर निकलने की जल्दी थी। वहीं तेज बारिश के पानी से जाम पड़े नाले व नालियों से गन्दगी भी बाहर निकल आई। यहां तक सुबह सुबह स्नान कर मंदिर पहुंचे लोगों को भी गन्दे पानी का सामना करना पड़ा। सब तरफ नाले-नालियां गन्दगी से अटे हुए होने पर शहर में बारिश के पानी भराव में ना तो नाले दिखाई दे रहे ओर ना ही नालियां। शहरवासियों का आरोप है कि ये सब नगर निगम अलवर के महापौर ओर आयुक्त सहित अधिकारियों व कर्मचारियों की देन हैं। बारिश आने से पहले जहां नाले व नालियों को साफ हो जानी थी लेकिन यहां तो नाले-नालियां तो साफ होना दूर रहा बल्कि सड़क पर पड़ा कचरा तक साफ नहीं हो पाया। शहरवासियों ने बताया कि पिछली बार सफाई का जो ठेका छूटा उसकी अपेक्षा इस बार यह ठेका करीब दोगुनी रेट पर छूटा ओर फिर भी सफाई नहीं हो पाई। यदि यहीं हाल रहा तो लोग चिंतित है कि इस तरह गंदे पानी का जमा होने से कहीं महामारी न फैल जाए। दूसरी तरफ जिला कलक्टर हर बार समीक्षात्मक बैठक में सख्त निर्दश तो देते हैं लेकिन निदेर्शों की फुस्स हो जाती है। सख्त निर्देश मात्र दिखावा होता है। सही मायने में बैठक एक खानापूर्ति बन कर रह गई है। वहीं जनप्रतिनिधि भी साफ-सफाई पर अनदेखी किए हुए दिखाई दे रहे हैं। हर तरफ मीडिया ने शहर की हालत दिखाई है लेकिन जनता द्वारा चुने जाने वाले जनप्रतिनिधि भी आंख मूंदे बैठे हैं, आखिर जनता शहर में साफ-सफाई व शहर को स्वच्छ व सुन्दर रखने के लिए जाए तो कहां जाए। उधर शहर में हुई बारिश व बारिश के बाद भरा जगह जगह पानी में आई गन्दगी में सबसे अधिक पॉलीथिन की मात्रा दिखाई दी। यहीं पॉलीथिन ने सभी नाले-नालियों को रोका हुआ है जबकि उच्चतम न्यायालय के आदेश है कि पॉलीथिन बन्द की जाए। यहां अलवर शहर में नगर निगम की ओर से कार्रवाई भी दिखावे वाली की जाती है।

जिला कलेक्टर ने समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक ली गई

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी। झाबुआ। कलेक्टर नेहा मीना द्वारा सोमवार को समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक ली गई। बैठक में सी एम हेल्पलाईन पर लंबित प्रकरणों को गंभीरता से लेकर समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। समयावधि पत्रो एवं जनसुनवाई व सी.एम. मॉनिट के नवीन पत्रो की समीक्षा कर लंबित प्रकरणों को समय सीमा में निराकृत करने के निर्देश दिए। पीएम किसान/सीएम किसान सम्मान निधि के हितग्राहियों के ई केवायसी अपडेशन एवं आधार सीडिंग किए जाने के निर्देश दिए। उचित मूल्य दुकानो के माध्यम से खाद्यान्न वितरण एवं ई- केवायसी करने के निर्देश दिए । प्रधानमंत्री की मंशा अनुसार एक पौधा अपनी मां के नाम अवश्य लगाए। राजस्व विभाग को सीमांकन एवं नामांतरण पर विशेष फोकस करे। कृषको के लिये फर्टिलाईजर उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए।

कार्यशाला में दी लड़कियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा के बारे में जानकारी

अलवर /राजेश गुप्ता। अलवर गायनेकोलॉजिस्ट सोसाइटी के द्वारा सोमवार को सपना शिक्षालय में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जहां 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पहल के तहत, सम्मानित डॉक्टर डॉ. अर्चना, डॉ. ऋचा, और डॉ. मिथिलेश ने इस कार्यशाला का संचालन किया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य एनीमिया और इसके युवा लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर पड़ने.वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। इस कार्यक्रम में सपना शिक्षालय में पढ़ रही 300 छात्राओं मे भाग लिया। डॉ. अर्चना, डॉ. ऋचा, और डॉ. मिथिलेश ने पर्याप्त हीमोग्लोबिन स्तर बनाए रखने के महत्व पर एक जानकारी पूर्ण सत्र आयोजित किया। उन्होंने एनीमिया को रोकने में आयरन और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर संतुलित आहार की भूमिका पर जोर दिया।

बाढ़ के समय राहत और बचाव के लिए बेहतर कोऑर्डिनेशन और क्विक एक्शन जरूरी: मुख्यमंत्री

बाढ़ के समय जन-धन की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता, अलर्ट मोड में रहें सभी जिले: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने की बाढ़ प्रबंधन तैयारियों की समीक्षा, कहा जलशक्ति मंत्री व दोनों राज्य मंत्री फील्ड में जाकर करें व्यवस्थाओं का निरीक्षण

♦भारत टाइम्स♦

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने सोमवार को आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में शासन स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बाढ़ प्रबंधन और जन-जीवन की सुरक्षा के दृष्टिगत जारी तैयारियों की समीक्षा की और व्यापक जनहित में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में मुख्यमंत्री जी द्वारा दिए गए प्रमुख दिशा-निर्देशः- प्रदेश में व्यापक जन-धन हानि के लिए दशकों तक कारक रही बाढ़ की समस्या के स्थायी निदान के लिए विगत 07 वर्षों में किए गए सुनियोजित प्रयासों के अच्छे परिणाम मिले हैं। बाढ़ की दृष्टि से अति संवेदनशील जिलों की संख्या में अभूतपूर्व कमी आई है। विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार हमने आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग कर बाढ़ से खतरे को न्यूनतम करने में सफलता पाई है। बाढ़ से जन-जीवन की सुरक्षा के लिए अंतरविभागीय समन्वय से अच्छा

कार्य हुआ है। इस वर्ष भी बेहतर कोऑर्डिनेशन, क्विक एक्शन और बेहतर प्रबन्धन से बाढ़ की स्थिति में लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित कराई जाए। प्रदेश में बाढ़ की दृष्टि से 24 जनपद अति संवेदनशील श्रेणी में हैं। इसमें महाराजगंज, कुशीनगर, लखीमपुर खीरी, गोरखपुर, बस्ती, बहराइच, बिजनौर, सिद्धार्थनगर, गाजीपुर, गोण्डा, बलिया, देवरिया, सीतापुर, बलरामपुर, अयोध्या, मऊ, फरुर्खाबाद, श्रावस्ती, बदायूं, अम्बेडकर नगर, आजमगढ़, संतकबीर नगर, पीलीभीत और बाराबंकी शामिल हैं। जबकि सहारनपुर, शामली, अलीगढ़, बरेली, हमीरपुर, गौतमबुद्ध नगर, रामपुर, प्रयागराज, बुलन्दशहर, मुरादाबाद, हरदोई, वाराणसी, उन्नाव, लखनऊ, शाहजहांपुर और कासगंज संवेदनशील प्रकृति के हैं।अति संवेदनशील और संवेदनशील क्षेत्रों में बाढ़ की आपात स्थिति हेतु पर्याप्त रिजर्व स्टॉक का एकत्रीकरण कर लिया जाए। इन स्थलों पर पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था एवं आवश्यक उपकरणों का भी प्रबन्ध होना चाहिए। माननीय जल शक्ति मंत्री एवं दोनों राज्य मंत्री द्वारा अति संवेदनशील तथा संवेदनशील क्षेत्रों का भ्रमण करें, साथ ही बाढ़ बचाव से जुड़ी परियोजनाओं का निरीक्षण करें। मौसम विभाग के अनुमान के अनुसार इस वर्ष पर्याप्त वर्षा होगी। नेपाल और उत्तराखंड की सीमा से लगे जनपदों में सतर्कता बनाए रखें। आमजन की सुविधा और राहत एवं बचाव कार्य के बेहतर बेहतर प्रबंधन के लिए बाढ़ बुलेटिन और मौसम का पूर्वानुमान नियमित रूप से जारी किया जाना चाहिए। भारतीय मौसम विभाग, केंद्रीय जल आयोग, केंद्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के साथ प्रदेश के सिंचाई एवं जल संसाधन, गृह, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, सिंचाई एवं जल संसाधन, खाद्य एवं रसद, राजस्व एवं राहत, पशुपालन, कृषि, राज्य आपदा प्रबन्धन, रिमोट सेन्सिंग प्राधिकरण के बीच बेहतर तालमेल हो। केंद्रीय एजेंसियों/विभागों से सतत संवाद-संपर्क बनाए रखें। यहां से प्राप्त आंकलन/अनुमान रिपोर्ट समय से फील्ड में तैनात अधिकारियों को उपलब्ध कराया जाए। नदी के किनारे बसे आवासीय इलाकों और खेती की सुरक्षा में नदियों का चैनेलाइजेशन उपयोगी सिद्ध हो रहा है। अम्बेडकर, बलरामपुर, बाराबंकी, सीतापुर और श्रावस्ती में जारी ड्रेनेज एवं चैनेलाइजेशन की परियोजनाओं को समय से पूरा कराएं। जो सिल्ट निकले उसका सदुपयोग किया जाए। राज्य स्तर और जिला स्तर पर बाढ़ राहत कंट्रोल रूप 247 एक्टिव मोड में रहें। उत्तर प्रदेश पुलिस रेडियो मुख्यालय द्वारा बाढ़ से प्रभावित जनपदों में 113 बेतार केंद्र अधिष्ठापित किए गए हैं। पूरे मॉनसून अवधि में यह केंद्र हर समय एक्टिव रहें। बाढ़/अतिवृष्टि की स्थिति पर रेग्युलर मॉनीटरिंग की जाती रहे। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ/पीएसी फ्लड यूनिट तथा आपदा प्रबंधन टीमें 247 एक्टिव मोड में रहें। आपदा मित्र स्वयंसेवकों के साथ-साथ होमगार्डों की सेवाएं भी ली जानी चाहिए। किसकी तैनाती कब और कहां होनी है, इस बारे में कार्ययोजना तैयार कर लें। सभी एजेंसियों के बीच बेहतर कोऑर्डिनेशन होना चाहिए। नौकाएं, राहत सामग्री आदि के प्रबंध समय से कर लें। बाढ़/अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों में देर न हो।

कांशीराम अस्पताल में संचारी रोकथाम अभियान- डिप्टी सीएम ने हरी झंडी दिखाकर किया शुभारंभ

संचारी रोकथाम अभियान का शुभारंभ करते डिप्टी सीएम डॉ. बृजेश पाठक

♦भारत टाइम्स♦

राम पाण्डेय। कानपुर जोन। कानपुर में चकेरी के कांशीराम अस्पताल में सोमवार को संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारंभ हरी झंडी दिखाकर डिप्टी सीएम डॉ. बृजेश पाठक ने किया इस दौरान उन्होंने संचारी रोगों व उससे बचाव के बारे में बताया साथ ही सभी को अभियान की शपथ दिलाई कार्यक्रम का शुभारंभ डिप्टी सीएम ने दीप प्रज्वलित कर किया कार्यक्रम में जिलाधिकारी राकेश कुमार ने कहा कि सभी को भागीदारी जरूरी है

अपने आसपास जलभराव व गंदगी न होने दें हरी झंडी दिखाने के दौरान डिप्टी सीएम ने पत्रकारों से रूबरू हुए यह अभियान 31 जुलाई तक चलने की बात कही उन्होंने कांशीराम अस्पताल में होने वाले जलभराव के शीघ्र निस्तारण करने की बात कही कहा कि इस मसले को जिलाधिकारी स्वयं देखेंगे उसके साथ उन्होंने कहा कि अस्पताल में जो व्यवस्था है व स्टाफ की कमी है उन्हें दूर करने के लिए प्रयास जारी है इससे जनता को समुचित और बेहतर उपचार मिल सकेंगे इस दौरान अपर निदेशक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण डॉ. संजू अग्रवाल, सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य रंजन कुमार, मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल डॉ संजय काला, सीएमएस डॉ. स्वदेश गुप्ता आदि रहे।

जलकल के टैंकरों ने पानी निकालना शुरू किया

अस्पताल में जलभराव होने के दौरान पहुंचे डिप्टी सीएम के सामने जिले के अफसरों की खासी फजीहत हुई इस पर जल कल के कई टैंकर अस्पताल से पानी निकालने में जुड़ गए अस्पताल के लोगों का कहना है कि अभी बारिश होगी तो फिर परिसर तालाब की शक्ल में तब्दील हो जाएगा जलकल ने यहां पर पंप सेट भी मंगाया है हालांकि इसका उपयोग नहीं हो सका।

31 रेलवे कर्मचारियों को 13.42 करोड़ का भुगतान

♦भारत टाइम्स♦

(शीतल निर्भीक) वाराणसी। मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में, 30 जून 2024 को सेवानिवृत्त हुए 31 कर्मचारियों को 13.42 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। प्रेमचंद सभागार कक्ष में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता अपर मंडल रेल प्रबंधक इन्फ्रा रोशन लाल यादव ने की। समारोह में मंडल कार्मिक अधिकारी विवेक मिश्रा, सहायक मंडल कार्मिक अधिकारी रमेश उपाध्याय, सहायक मंडल वित्त प्रबंधक संजय मिश्रा समेत लेखा एवं कार्मिक विभाग के निरीक्षक व कर्मचारी मौजूद थे। श्री रोशन लाल यादव ने अपने संबोधन में रेलवे कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और उन्हें स्वस्थ्य रहने के लिए नियमित व्यायाम, योगाभ्यास आदि करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि वाराणसी मंडल में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सभी प्रकार के देयों का भुगतान उनके सेवानिवृत्ति के दिन ही किया जाता है। श्री यादव ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवा मेडल प्रदान कर उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। मंडल कार्मिक अधिकारी विवेक मिश्रा ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को माला पहनाकर सम्मानित किया और आई कार्ड, सेवा प्रमाण पत्र एवं पीपीओ संबंधित सभी दस्तावेजों की जानकारी दी। उन्होंने कर्मचारियों को सतर्क रहने और अपनी प्राप्तियों को सुरक्षित रखने की सलाह दी। सेवानिवृत्त कर्मचारियों में मुख्य टिकट निरीक्षक सुरेंद्र प्रसाद पांडे, राकेश कुमार श्रीवास्तव, स्टेशन अधीक्षक एस आर जैसवाल, सफाई वाला इरशाद अहमद, और ट्रेक मेंटेनर कपिल कुमार अस्थाना समेत अन्य शामिल थे। इस आशय की जानकारी जनसंपर्क अधिकारी अशोक कुमार ने मीडिया को दी।

यूपी में नए कानूनों के तहत अमरोहा में दर्ज हुआ पहला केस

उत्तर प्रदेश की बरेली में दूसरा तो आगरा में आया तीसरा मामला दर्ज

♦भारत टाइम्स♦

(शीतल निर्भीक)। लखनऊ। केंद्र सरकार द्वारा लागू किए गए तीन नए आपराधिक कानूनों के तहत सोमवार को अमरोहा जिले के रहरा थाने में पहला मुकदमा दर्ज किया गया। वहीं दूसरा मुकदमा बरेली के बारादरी थाने में, जबकि तीसरा आगरा पुलिस कमिश्नरेट के शमशाबाद थाने में दर्ज किया गया। पहली एनसीआर (असंज्ञेय अपराध की सूचना रिपोर्ट) बांदा के बबेरू थाने में लिखी गयी है। डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि अमरोहा के रहरा थाने में सुबह 9.51 बजे गैर इरादतन हत्या के मामले में बीएनएस (भारतीय

न्याय संहिता 2023) की धारा 106 के तहत दर्ज हुआ है, जो खेत में किसान की करंट लगने से हुई मौत से संबंधित है। इस मामले में दो लोगों को नामजद किया गया है। वहीं दूसरा मुकदमा बरेली के बारादरी थाने में सुबह 10.17 बजे बीएनएस की धारा 97 के तहत दर्ज हुआ है। यह प्रकरण बरेली के अपोलो अस्पताल से एक माह के बच्चे का अपहरण करने से संबंधित है, जिसमें अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है। वहीं तीसरा मुकदमा आगरा पुलिस कमिश्नरेट के शमशाबाद थाने में सुबह 10.44 बजे बीएनएस की धारा 305 (ए) व 331 (4) के तहत दर्ज किया गया है।

वीडियो भी किया जारी

वहीं नए कानूनों के लागू होने के बाद प्रदेश पुलिस ने जागरूकता संबंधी एक वीडियो भी जारी किया है, जिसमें बताया गया कि अंग्रेजों द्वारा बनाए गये तीन कानूनों को समाप्त कर दिया गया है। अब नए कानून लागू हो चुके हैं, जो दंड आधारित होने के बजाय न्याय आधारित हैं। साथ ही नए कानूनों की तमाम धाराओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी है।

बदलाव का है प्रतीक

एक जुलाई से लागू तीन नए आपराधिक कानून औपनिवेशिक युग के कानूनों से एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक हैं, जो सामाजिक गतिशीलता को प्रदर्शित करता है। नए कानून दंड आधारित न होकर न्याय आधारित हैं।-प्रशांत कुमार, डीजीपी।

जिलाधिकारी ने वन महोत्सव का किया शुभारंभ

♦भारत टाइम्स♦

आनंद मोहन मिश्रा/ बलिया। पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ अभियान के अन्तर्गत देश में 01 जुलाई, 2024 से 07 जुलाई, 2024 तक वन महोत्सव मनाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत दिनांक 01.07.2024 को कलेक्ट्रेट परिसर में वन विभाग वन महोत्सव 2024 के तहत वृक्षारोपण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर में आम्रपाली आम का पौध लगाकर वन महोत्सव की शुरूआत की गयी। जिलाधिकारी, बलिया द्वारा पौधरोपण के उपरान्त आम जनमानस को वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जागरूक करते हुए संदेश दिया गया कि रजीवन शब्द की उत्पति जीव व वन शब्द से हुई है अर्थात जीवन का अस्तित्व बिना वन के सम्भव नही है अर्थात जीवन के लिए पेड़-पौधों का होना अपरिहार्य है। पेड़ लगाये जीवन

बचायें।र इसके बाद पुलिस अधीक्षक, बलिया द्वारा भी आम का पौध लगाया गया तथा संदेश दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को वृक्षारोपण कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए तथा धरा को हरियाली से परिपूर्ण करने हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम सफलतापूर्वक किया जाना आवश्यक है। अपर जिलाधिकारी डीपी सिंह द्वारा महोगनी का वृक्ष लगाया गया इसके साथ ही प्रभागीय निदेशक, सामाजिक वानिकी प्रभाग, बलिया द्वारा महुआ का पौध तथा उप प्रभागीय वनाधिकारी, बलिया द्वारा मौलश्री का पौध लगाकर वन महोत्सव कार्यक्रम आरम्भ किया गया।

सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य परिवार ने महादेव का आशीर्वाद लेकर की नए शिक्षण सत्र की शुरूआत

♦भारत टाइम्स♦

पिपलियामंडी। महेश मरेठा। सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य परिवार द्वारा विद्यालय नवीन शेक्षणिक सत्र की शुरूआत महादेव के दर्शन कर हुई! विद्यालय आचार्य परिवार द्वारा सर्वप्रथम माँ दुधाखेड़ी माताजी भानपुरा बड़े एवं छोटे महादेव तक्षकेशवर महादेव हिंगलाज माता के दर्शन कर विद्यालय मे संख्या वृद्धि की कामना महादेव से की गई! इसके

पश्चात विद्यालय आचार्य परिवार ने मिनी गोवा एवं गांधीसागर पर्यटन क्षेत्र का भी आनंद लिया! गांधीसागर पर्यटन एवं भानपुरा छत्री के बारे मे आवश्यक जानकारिया भैया बहिनों को बताई गई! समस्त आचार्य परिवार द्वारा पुरे आनंद के साथ इस पर्यटन मे सहभागिता की गई! इस अवसर पर प्राचार्य प्रधानाचार्य एवं आचार्य परिवार उपस्थित थे।

औषधीय पौधों के एकीकरण के साथ कृषि वानिकी की अवधारणा के

जलवायु स्मार्ट प्रमाण का विकास के अंतर्गत किया गया किसानों को अश्वगंधा बीज का वितरण

♦भारत टाइम्स♦

मल्हारगढ़। महेश मरेठा। औषधिए फसलों को बढ़ावा देने के मल्लिए सॉलिडेरीडाड संस्था ने नीदरलैंड एंटरप्राइज एजैंसी के सहयोग से 15 किसानों को प्रशिक्षण कर बीज वितरण किया गया, किसानों को खेत की तैयारी, बिज दर, खाद प्रबंधन, कम लागत में अत्यधिक उत्पादन, मूल्य सर्वधन आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया, किसानों को प्रति एकड़ के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन प्लॉट के रूप में अश्वगंधा बीज वितरण किया गया ,इस प्रोग्राम का मुख्य

उद्देश्य किसानों को जलवायु के अनुकूल ओषधिय खेती को बढ़ावा देना है ताकि हमारी जमीन की मिठी की उर्वरक क्षमता बनी रहे है और सस्टेनेबल उत्पादन हो सके।

निर्माण कार्य महाप्रबंधक ने वाराणसी सिटी स्टेशन का किया गहन निरीक्षण

गुणवत्ता के साथ निर्माण कार्यों को निर्धारित समय सीमा में करें पूरा-महाप्रबंधक पूर्वोत्तर रेलवे

♦भारत टाइम्स♦

(शीतल निर्भीक)। वाराणसी। पूर्वोत्तर रेलवे की महाप्रबंधक सुश्री सौम्या माथुर ने सोमवार को भटनी-वाराणसी सिटी खंड पर विण्डो ट्रेलिंग से गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने दोहरीकरण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया और मानसून के मौसम में सुरक्षित रेल संचलन के लिए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। सिगनल की दृश्यता को दुरुस्त बनाए रखने का भी निर्देश दिया गया। इस दौरान उन्होंने गुणवत्ता के साथ निर्माण कार्यों को निर्धारित समय सीमा में पूरा करने का कड़े निर्देश भी दिए। पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर की महाप्रबंधक सुश्री सौम्या माथुर कृषक एक्सप्रेस से वाराणसी सिटी स्टेशन पहुंचीं और वहां चल रहे निर्माण कार्यों का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन के प्रवेश द्वार, सकुर्लेटिंग एरिया, प्लेटफार्म शेड, पे एण्ड यूज प्रसाधन, प्रतीक्षालय का सौंदर्यीकरण, बैठने की व्यवस्था, ग्लोसाइन स्टेशन नाम बोर्ड, साइनेज, वाटर ड्रेनेज,

नवनिर्मित टिकट काउंटर भवन और अमृत भारत स्टेशन परियोजना के तहत किए जा रहे विकास कार्यों का भी निरीक्षण किया। अमृत भारत योजना के तहत वाराणसी सिटी स्टेशन को 59.87 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक बनाया जा रहा है। महाप्रबंधक ने इस योजना के कार्य योजना और प्रस्तावित आरेख (ब्लू प्रिंट) का भौतिक निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन के भवन के सुंदरीकरण, सकुर्लेटिंग एरिया के विस्तार, नए टिकट काउंटर, एटीवीएम, क्यूआर स्कैनर और अन्य यात्री सुविधाओं की समीक्षा की। इसके साथ ही, उन्होंने यूटीएस काउंटर पर खड़े यात्रियों को एटीवीएम मशीन से स्वयं टिकट बनाने के लिए प्रेरित किया। महाप्रबंधक सुश्री माथुर ने कहा कि वाराणसी सिटी पूर्वोत्तर रेलवे का महत्वपूर्ण स्टेशन है और अमृत भारत योजना के तहत इसका विकास तेजी से जारी है। नए प्रतीक्षालय, आरक्षण केंद्र भवन और पे एण्ड यूज प्रसाधन का निर्माण पूरा हो चुका है। उन्होंने 12 मीटर के पैदल उपरिगामी पुल और अन्य निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। इस निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक विनीत कुमार श्रीवास्तव, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) कौशलेस सिंह, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) राकेश रंजन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर -3 अनुज वर्मा, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक शेख रहमान, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक अजय प्रताप सिंह, वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर रजत प्रिय, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी समीर पॉल,वरिष्ठ मंडल विद्युतइंजीनियर (सामान्य) पंकज केशरवानी, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त एस रामकृष्णन, उप मुख्य इंजीनियर (गतिशक्ति) आई सी सुभाष, मंडल वाणिज्य प्रबंधक रमेश पाण्डेय अन्य वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे। इस आशय की जानकारी जनसंपर्क अधिकारी अशोक कुमार ने मीडिया को जानकारी दी है।

इटावा: श्रद्धालुओं से भरी बस में ट्रक ने मारी टक्कर एक की मौत नौ घायल

♦भारत टाइम्स♦

राम पाण्डेय। इटावा। में तीर्थ यात्रा पर निकली श्रद्धालुओं से भरी बस में आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर ट्रक ने टक्कर मार दी हादसे में बस सवार एक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि नौ यात्री घायल हो गए घटना के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई घटना के वक्त बस में करबी 60 यात्री मौजूद थे घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची यूपीडा व ऊसराहार पुलिस ने बस में फंसे यात्रियों को बाहर निकाला घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है ऊसराहार थाना क्षेत्र से गुजरने वाले आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर रविवार रात करीब दो बजे राजस्थान से श्रद्धालुओं से भरी बस मथुरा घूमते हुए अयोध्या जा रही थी जिसमें करीब 60 यात्री मौजूद थे आवाज आने पर चालक ने बस को कठौतिया गांव के पास रोक दिया बस सवार एक यात्री पीछे देखने गया तभी पीछे से आ रहे ट्रक ने खड़ी बस में टक्कर मार दी जिससे नवरंग निवासी हनुमानगढ़ राजस्थान की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं बस में पीछे बैठे यात्री मुखराम निवासी रोड़ा वाली हनुमानगढ़

राजस्थान, गोपीराम निवासी रामसारा नारायण हनुमानगढ़ कुम्भाराम निवासी चूरू राजस्थान, पुरखाराम निवासी चूरू राजस्थान, टुम्बाराम निवासी चूरू राजस्थान, महावीर निवासी चूरू राजस्थान, गुड्डी निवासी हनुमानगढ़ राजस्थान, बजरंग निवासी हनुमानगढ़ राजस्थान के अलावा एक अन्य महिला गंभीर रूप से घायल हो गई सूचना पर मौके पर पहुंची यूपीडा व ऊसराहार पुलिस ने बस में फंसे सभी यात्रीयों को सुरक्षित बाहर निकाला और घायलों को एंबुलेंस से इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया वहीं मृतक का पंचनामा भरवाकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है साथ ही मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई इस संबंध में थाना प्रभारी ऊसराहार मंसूर अहमद ने बताया कि खड़ी बस में ट्रक ने टक्कर मार दी जिसमें एक की मौत हुई है और नौ घायल हुए हैं।